

कभी सोचा है कि मानव रूप में जो भगवान धरती पर आए थे, उनकी मृत्यु कैसे हुई।

संसार के कल्याण के लिए उन्होंने तमाम लीलाएं रचीं और लोगों को जीवन का गूढ़ पाठ पढ़ाया। जन्म लेने का मकसद पूरा होने के बाद हमारी ही तरह उन्होंने भी दुनिया को अलविदा कहा था।

जब-जब धरती पर अधर्म बढ़ा है, भगवान ने खुद यहां कई रूपों में अवतरित होकर दुनिया का उद्धार किया है।

संसार के कल्याण के लिए उन्होंने तमाम लीलाएं रचीं और लोगों को जीवन का गूढ़ पाठ पढ़ाया। जन्म लेने का मकसद पूरा होने के बाद हमारी ही तरह उन्होंने भी दुनिया को अलविदा कहा था।

मनुष्य रूप में जन्म लेने के कारण ईश्वर को भी धरती से वापस जाना पड़ा। हम इसीलिए उन्हें पूजते हैं, क्योंकि उनके जीवन की हर घटना हमारे पूरे अस्तित्व को बदल सकती हैं। हम उनकी लीलाओं से बहुत कुछ सीख सकते हैं। आज हम आपको बताएंगे कि अवतार रूप में संसार में आने वाले देव पुरुष किस तरह यहां से वापस गए थे।

श्रीकृष्ण को बहेलिए ने मारा तीर

महाभारत की समाप्ति के बाद कृष्ण को इसका जिम्मेदार मानते हुए कौरवों की मां गांधारी ने उन्हें शाप दिया था। उन्होंने श्रीकृष्ण से कहा कि 'आप जानते थे इस युद्ध का परिणाम कितना भयावह होगा और इतने लोगों की मौत होगी, फिर भी आपने इसे नहीं रोका। मैंने आपसे कितनी बार इस युद्ध को रोकने का आग्रह किया, लेकिन आपने कुछ नहीं किया। पुत्रों को खोने का दर्द अपनी मां देवकी से पूछो कि पुत्रों को खोने का गम क्या होता है।' फिर उन्होंने गुस्से से कहा कि 'अगर मैंने पूरे मन से भगवान विष्णु की पूजा की हो और अपने पति की पूरे मन से सेवा की हो, तो जैसे मेरा कुल समाप्त हुआ, तुम्हारा कुल भी तुम्हारी आंखों के सामने समाप्त हो जाएगा और तुम देखते रह जाओगे।' द्वाराका तुम्हारे सामने ही समुद्र में डूब जाएगा और यदुवंश का नाश हो जाएगा।'

इतना कहने के बाद जब क्रोध शांत हुआ तो गांधारी भगवान श्रीकृष्ण के कदमों में गिर पड़ीं। भगवान ने उन्हें उठाया और कहा कि 'माता मुझे आपसे इसी आशीर्वाद की प्रतीक्षा थी, मैं आपके शाप को ग्रहण करता हूँ।' इसके बाद गांधारी और यदुवंश के बच्चों को ऋषियों से मिले शाप के कारण द्वाराका के लोग अनुशासनहीन हो गए और उनमें बुरी आदतें आ गईं। एक बार उत्सव के लिए

शिव का अर्थ है कल्याण

महंत रविंद्र पुरी महाराज धर्मनगरी के प्रख्यात शिव विद्वा के उपासकों में से एक माने जाते हैं। महंत रविंद्र पुरी महाराज ने 1984 में संन्यास ग्रहण किया था। वर्तमान में वे कनखल स्थित दक्षेश्वर महादेव मंदिर के परमाध्यक्ष व महानिर्वाणी अखाड़ा के सचिव हैं। सर्वेश्वर भगवान शिव की जगत कल्याणकारी अनेक लीलाओं का वर्णन शिव पुराण के अंतर्गत श्री व्यास जी ने किया है। इसका पठन पाठन श्रवण कर सांसारिक प्राणी तो क्या देवताओं ने भी मनोवांछित फल की प्राप्ति की है। इसके अलावा मानव जगत में शिव मोक्ष के देव हैं। शिव के पूजन के कई तरह के विधि विधान शास्त्रों और पुराणों में वर्णित है। लेकिन, यदि देखा जाए तो शिव से सरल और कोई देव नहीं है। वास्तव में शिव ही इस संसार का सत्य हैं। पृथ्वी पर जितने उपासक शिव के हैं अन्य किसी देवता के नहीं हैं, क्योंकि शिव ही सभी रूपों में विद्यमान हैं। शिव महापुराण में वर्णित है कि भगवान शिव ने विष्णु भगवान से कहा था कि 'त्रिदेवा अपि में रूपं हरः पूर्णों विशेषतः। उमाया अपि रूपाणि भविष्यन्ति त्रिधा सुता।।'

अर्थात है तात् यद्यपि ब्रह्म हरि तथा तुम तीनों ही मेरे रूप हो परंतु विशेषकर हरि ही मेरा पूर्ण रूप है, इसी प्रकार लक्ष्मी, सरस्वती तथा उमा शक्ति के भी तीन रूप हैं, किंतु उमा सब में पूर्ण रूप हैं। विष्णु रूप की लक्ष्मी, ब्रह्म रूप की सरस्वती तथा हरि रूप की उमा अर्धांगिनी होंगी इसलिए सिर्फहर यानि शिव को पूजने से ही सभी देवताओं की कृपा प्राप्त हो जाती है। शिव का वास श्मशान में भी माना जाता है, इसलिए श्मशान की भस्म का पूजन भी विशेष पूजन विधियों में आता है। कनखल से भगवान शिव का आदि काल से नाता है। यह पृथ्वी पर मात्र एक ऐसा मानव सभ्यता वाला नगर है जहां पर साल में श्रवण मास में शिव वास करते हैं।

सरयू नदी में समा गए श्रीराम

पद्म पुराण के अनुसार, श्रीराम से मिलने एक बार एक संत आए और उन्होंने उनसे एकांत में बात करनी चाही। श्रीराम ने आदेश दिया कि कोई भी उनकी बातचीत के बीच न आए और इसकी जिम्मेदारी लक्ष्मण को दी। साथ ही संत के कहने पर प्रतिज्ञा की कि अगर किसी ने उनकी बात सुनी और बीच में आया तो उसे मृत्युदंड मिलेगा। दरअसल, संत के रूप में वो महाकाल आए थे, जिन्होंने राम से कहा कि हे प्रभु। धरती पर आपका रहने का समय समाप्त हो चुका है, इसलिए अब आप अपने श्रीधाम में पधारें। इसी बीच द्वार पर महाक्रोधी दुर्वासा ऋषि आए और श्रीराम से मिलने की जिक्र करने लगे। उन्होंने कहा कि अगर अभी लक्ष्मण ने उनसे मिलने न दिया तो वे राम को शाप दे देंगे। लक्ष्मण भाई के आदेश से बंधे थे, फिर भी उन्होंने भाई को शाप से बचाने के लिए खुद का जीवन दाव पर लगाने की ठानी। वे श्रीराम के पास चले गए और दुर्वासा ऋषि के आने की जानकारी दी। श्रीराम को अपनी प्रतिज्ञा याद करके बहुत दुःख हुआ। वे अपने परम प्रिय भाई को मौत की सजा भला कैसे दे सकते थे।

लक्ष्मण का जाना

पहले के समय में देश से निकाला जाना भी मृत्युदंड के बराबर ही माना जाता था। इसलिए श्रीराम ने लक्ष्मण को देश छोड़ कर चले जाने का आदेश दिया। पर बिना श्रीराम के लक्ष्मण नहीं रह सकते थे, इसलिए उन्होंने जाकर सरयू नदी में समाधि ले ली और फिर शेषनाग के रूप में



जब-जब धरती पर अधर्म बढ़ा है, भगवान ने खुद यहां कई रूपों में अवतरित होकर दुनिया का उद्धार किया है। संसार के कल्याण के लिए उन्होंने तमाम

लीलाएं रचीं और लोगों को जीवन का गूढ़ पाठ पढ़ाया। जन्म लेने का मकसद पूरा होने के बाद हमारी ही तरह उन्होंने भी दुनिया को अलविदा कहा था।

यदुवंशी सागर किनारे एकत्र थे। इसी दौरान किसी बात पर नशे में डूबे इन लोगों में लड़ाई शुरू हो गई। इसके बाद वहां उगी एरका नामक घास से लोग एक-दूसरे पर प्रहार करने लगे। वो घास शाप के प्रभाव के कारण मूसल बन जाती थी और इन लोगों की मृत्यु हो जाती थी। इस तरह नष्ट हुए वंश के बाद श्रीकृष्ण एक बार जंगल में एक पेड़ के नीचे विश्राम कर रहे थे, तभी एक तीर आकर उनके तलवों में लगा।

बहेलिए ने शिकार समझकर तीर मारा था। उसने बहुत माफी मांगी, लेकिन श्रीकृष्ण को तो इसी बहाने अपने धाम जाना था और वो चले गए।

देवताओं के अंश पांडव

महाभारत युद्ध के उपरांत अपनी प्रजा की सेवा करने के कुछ समय बाद जब श्रीकृष्ण भी इस लोक से जा चुके थे, तो पांडव भी द्रौपदी समेत स्वर्ग जाने के लिए निकले। ये सभी पांडव किसी न किसी देवता का रूप या अंश थे। अनेक तीर्थों, नदियों व समुद्रों की यात्रा करते-करते पांडव आगे बढ़ने लगे। यात्रा करते-करते पांडव हिमालय तक पहुंच गए, हिमालय लांघ कर पांडव आगे बढ़े तो उन्होंने सुमेरु पर्वत के दर्शन किए। वहीं से पहले द्रौपदी फिर सारे पांडव एक-एक करके मरने लगे, सिर्फ युधिष्ठिर और उनके साथ ही चल रहा कुत्ता जीवित रहा। इसके

सुख पाने के लिए ये 6 उपाय आजमाएं



सुख की चाहत हर किसी की होती है। इसके चलते ही लोग परिश्रम करते हैं ताकि धन के जरिए सुख को प्राप्त किया जा सके। लेकिन सुख मन से भी मिलना चाहिए। इसके लिए घर का वास्तु बेहतर होने बेहद जरूरी है।

किचिन को यहां बनाने से होती है किच-किच

दुनिया के हर धर्म में रसोईघर को बेहद अहम माना जाता है। वास्तु शास्त्र के अतिरिक्त फेंगशुई में भी किचन को लेकर कई टिप्स दिए गए हैं।

रसोईघर के लिए फेंग शुई के उपाय

● विभिन्न ज्योतिष शास्त्रों के अनुसार रसोईघर को शुभ दिशा में होना चाहिए। यदि रसोईघर सही दिशा या स्थिति में नहीं है तो यह कई प्रकार की समस्या उत्पन्न कर सकता है। फेंगशुई के अनुसार रसोईघर के लिए निम्न उपाय हैं।

● फेंगशुई के अनुसार रसोईघर को घर के पूर्व व दक्षिण दिशा की ओर होना चाहिए, क्योंकि ये दोनों दिशाएं वायु और प्रकाश का संचालन करती

हैं।

- रसोईघर की दीवारों का रंग सफेद रखना चाहिए। सफेद रंग स्वच्छता की निशानी माना जाता है।
- रसोईघर में टूटे हुए बर्तन, और शीशा कभी नहीं रखने चाहिए। ऐसी चीजें अशुभ साबित हो सकती हैं।
- जरूरत न होने पर रसोई का दरवाजा बंद ही रखना चाहिए।
- झाड़ू और पोछे को रसोईघर से दूर रखना चाहिए। ऐसी चीजें घर में अन्न की कमी का आभास कराते हैं।
- रसोईघर को घर में मुख्य प्रवेश द्वार के सामने नहीं होना चाहिए। ऐसे में विवाद होना संभव है।
- रसोईघर में बिजली के अत्यधिक

उपकरण नहीं रखने चाहिए।

- चाकू, कैंची या किसी अन्य कटार को रसोईघर की दीवार पर नहीं लटकाना चाहिए।
- इस्तेमाल में न आने वाले बर्तन व बासी भोजन को रसोईघर में नहीं रखना चाहिए।
- किचन में हमेशा अच्छे मूड से जाना चाहिए। कहा जाता है एक हैप्पी कूक इज द बेस्ट कूक।

रसोईघर उपकरण के लिए फेंग शुई के उपाय

- चूल्हा, स्टोव या गैस, रसोईघर में इस प्रकार से रखा होना चाहिए कि जातक दरवाजे को देख सके। इससे मनुष्य तनावमुक्त होता है।
- रसोईघर में माइक्रोवेव ओवन को दक्षिण- पश्चिम दिशा में रखना चाहिए, जिसके फलस्वरूप रसोईघर स्वः ही सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त करता है।
- रेफ्रिजरेटर एक इलेक्ट्रिक मशीन है, जिसे ऐसे स्थान या मंडल में रखना चाहिए जो जातक के लिए विशेष प्रेरक के रूप में हो।
- दक्षिण दिशा में रेफ्रिजरेटर रखने से नकारात्मक ऊर्जा पैदा होती है, क्योंकि दक्षिण दिशा का तत्व 'अग्नि' है।
- जिसके फलस्वरूप दक्षिण दिशा, रेफ्रिजरेटर के ठंडे तापमान से मेल नहीं खाता।

रसोईघर (किचिन), घर का एक महत्वपूर्ण भाग है।



यदि मनुष्य अच्छा भोजन करता है तो उसका दिन भी अच्छा गुजरता है।

अत्यधिक तनाव के कारण लोग स्वाभाविक नींद को भूलते जा रहे हैं और दवाइयों के सहारे सोने का प्रयास करते हैं, लेकिन अगर ध्यान तकनीक का यूज किया जाए तो यह नींद के लिए काफी मददगार साबित हो सकता है।

नींद विश्रांति का सबसे अच्छा तरीका है जो ध्यान, मेडिटेशन के बिल्कुल करीब है। इसीलिए जो लोग अच्छी नींद लेते हैं, वे सदैव तन से भी सेहतमंद रहते हैं और मन से भी प्रफुल्लित रहते हैं। शोकसपीयर के अनुसार नींद प्रतिदिन के जीवन के लिए मृत्यु, कठिन परिश्रम के लिए स्नान, घायल मस्तिष्क के लिए शान्तिदायिनी औषधि और क्षतिपूर्ण शरीर के लिए अमृतकुंड है।

वस्तुतः मृत्यु के अनंतर भी हम एक लंबे विकास की स्थिति में होते हैं और जिस तरह हंसते-खेलते शिशु के रूप में हम पुनः जीवन धारण करते हैं, ठीक उसी तरह प्रतिदिन की नींद के बाद भी नवचेतना के साथ नया जीवन प्राप्त कर हम पुनः अपने कामकाज में लग जाते हैं। वाह! यह कैसा अद्भुत खेल है प्रकृति का यह कैसी महान कृपा है निद्रादेवी की मनुष्य पर की जो वह हारा थका चूर-चूर होकर संसार की परेशानियों से क्लांत होकर निद्रादेवी की गोद में आकर सो जाता है और दूसरे दिन नव जागृत स्फूर्ति नवजीवन प्रसन्नता एवं उत्साह के साथ तरोताजा होकर उठता है। मजे की बात तो यह है कि इस महान उपकार के बदले हमें मां पकृति को कुछ भी देना नहीं पड़ता। किन्तु मनुष्य तो आखिर मनुष्य ही ठहरा, जो मुत में प्राप्त हुई इसनी अमूल्य सौगात, जिसकी तुलना में संसार का कोई भी पदार्थ

अहंकार से समाज का विनाश हो सकता है, लेकिन जनकल्याण की भावना संपूर्ण मानव जाति का भला कर सकती है।

भगवान इंद्र के कहने पर दधीचि ने किया था 'असंथि दान'

एक बार देवराज इंद्र को अपनी शक्तियों का अहंकार हो गया और उन्होंने गुरु बृहस्पति को अपनी बातों से दुखी कर दिया। बृहस्पति के देवलोक छोड़ते ही देवताओं की शक्तियां कम हो गईं और असुरों ने उन पर आक्रमण कर दिया। नाना प्रकार की कोशिशें करने के बाद महर्षि विश्वरूप की कृपा से देवता जीत तो गए, लेकिन इंद्र ने दोबारा गलती कर दी। उन्होंने अपनी बातों से विश्वरूप को दुखी कर दिया। विश्वरूप के साथ छोड़ते ही वृतासुर नाम के असुर ने देवराज इंद्र पर आक्रमण कर दिया। देवराज भागकर सीधे भगवान विष्णु की शरण में आ गए। विष्णु ने उनसे कहा कि अहंकार के वशीभूत होकर आपने जो गलती की है, वह अक्षम्य है। ऐसी स्थिति में महर्षि दधीचि ही आपकी रक्षा कर सकते हैं।

कामधेनु गाय ने उनके शरीर को चाटना आरंभ कर दिया। कुछ देर में महर्षि के शरीर की त्वचा, मांस और मज्जा उनके शरीर से विलग हो गए। मानव देह के स्थान पर सिर्फ उनकी अस्थियां ही शेष रह गईं। इंद्र ने उन



इंद्र ने दधीचि के पास जाकर कहा कि श्री विष्णु के बताए उपाय के अनुसार, यदि आप अपनी अस्थियां दान में दे दें तो उनसे वज्र बनाकर वृतासुर से युद्ध किया जा सकता है। तब दधीचि ने कहा कि यदि मेरी अस्थियां जनकल्याण के काम में लायी जाती हैं, तो मैं तैयार हूँ। उन्होंने अपने शरीर पर मिष्ठान्न का लेपन किया और समाधिस्थ हो गए।

अस्थियों से 'तेजवान' नामक वज्र बनाया। इस वज्र के बल पर उन्होंने वृतासुर को ललकारा।

'तेजवान' वज्र से प्रहार कर इंद्र ने वृतासुर का वध कर डाला। सच ही कहा गया है कि अहंकार से समाज का विनाश हो सकता है, लेकिन जनकल्याण की भावना संपूर्ण मानव जाति का भला कर सकती है।

मेडिटेशन के बिल्कुल करीब है नींद

अत्यधिक तनाव के कारण लोग स्वाभाविक नींद को भूलते जा रहे हैं और दवाइयों के सहारे सोने का प्रयास करते हैं, लेकिन अगर ध्यान तकनीक का यूज किया जाए तो यह नींद के लिए काफी मददगार साबित हो सकता है।

नींद विश्रांति का सबसे अच्छा तरीका है जो ध्यान, मेडिटेशन के बिल्कुल करीब है। इसीलिए जो लोग अच्छी नींद लेते हैं, वे सदैव तन से भी सेहतमंद रहते हैं और मन से भी प्रफुल्लित रहते हैं। शोकसपीयर के अनुसार नींद प्रतिदिन के जीवन के लिए मृत्यु, कठिन परिश्रम के लिए स्नान, घायल मस्तिष्क के लिए शान्तिदायिनी औषधि और क्षतिपूर्ण शरीर के लिए अमृतकुंड है।

वस्तुतः मृत्यु के अनंतर भी हम एक लंबे विकास की स्थिति में होते हैं और जिस तरह हंसते-खेलते शिशु के रूप में हम पुनः जीवन धारण करते हैं, ठीक उसी तरह प्रतिदिन की नींद के बाद भी नवचेतना के साथ नया जीवन प्राप्त कर हम पुनः अपने कामकाज में लग जाते हैं। वाह! यह कैसा अद्भुत खेल है प्रकृति का यह कैसी महान कृपा है निद्रादेवी की मनुष्य पर की जो वह हारा थका चूर-चूर होकर संसार की परेशानियों से क्लांत होकर निद्रादेवी की गोद में आकर सो जाता है और दूसरे दिन नव जागृत स्फूर्ति नवजीवन प्रसन्नता एवं उत्साह के साथ तरोताजा होकर उठता है। मजे की बात तो यह है कि इस महान उपकार के बदले हमें मां पकृति को कुछ भी देना नहीं पड़ता। किन्तु मनुष्य तो आखिर मनुष्य ही ठहरा, जो मुत में प्राप्त हुई इसनी अमूल्य सौगात, जिसकी तुलना में संसार का कोई भी पदार्थ

समर्थ नहीं है, उसे भी अपने पास रख नहीं पाता। जी हां, हम सभी जानते हैं कि आज के संसार में एक गहरी नींद का आनंद तो जैसे दुर्लभ अवसर बन गया है, क्योंकि आज लाखों लोग स्लीप एजिनिया, अनिद्रा, रेस्टलेस लेग

रूप से व्यक्ति की खाने की आदतों को प्रभावित करता है और आगे चलकर फिर वह उसकी नींद और स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। ऐसी बीमारियों में समुचित ध्यान तकनीक का यदि नियमित रूप से अयास किया जाये तो वह शरीर, स्वास्थ्य और नींद के लिए काफी मददगार सिद्ध हो सकती है।

मनुष्य के लिए कितने घंटे की नींद पर्याप्त है। इस विषय पर वर्षों से अनेक विचार-विमर्श और बहस होती रही हैं। शरीर विज्ञानियों के

सिंड्रोम एवं नार्कोलेप्सी जैसे विविध नींद संबंधी विकारों से ग्रस्त हैं।

भारत में हुए एक ताजा सर्वेक्षण से यह तथ्य सामने आया है कि बड़े महानगरों में रहनेवाले लगभग 75 प्रतिशत से भी अधिक लोग नींद संबंधी शिकायतों को लेकर अपने डॉक्टरों के पास पहुंचते हैं। क्यों क्योंकि अत्यधिक तनाव के कारण लोग स्वाभाविक निद्रा को भूलते जा रहे हैं और दवाइयों के सहारे सोने का प्रयास करते हैं। हमारी नींद को प्रभावित करनेवाला अन्य एक महत्वपूर्ण कारक है हमारा आहार। जी हां। यह एक चिकित्सकीय सिद्ध तथ्य है कि खराब मानसिक स्वास्थ्य प्रतिकूल

अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को नींद की आवश्यकता अलग-अलग होती है। कई व्यक्ति तीन-चार घंटे की नींद में ही पूर्ण विश्राम ले लेते हैं, जबकि बहुत से लोग ऐसे भी होते हैं जो आठ-दस घंटे सोने पर भी पर्याप्त विश्राम नहीं ले पाते। अतः निद्रा का समय व्यक्ति विशेष को अपनी आवश्यकतानुसार दिनचर्या में समाविष्ट करना चाहिए। शास्त्रकारों के अनुसार प्रातः जल्दी उठना और रात्रि को जल्दी सो जाना उत्तम स्वास्थ्य एवं स्वस्थ मस्तिष्क के लिए सर्वोत्तम है।

ईश्वर बाहर नहीं, आपके मन में



आत्म-सत्ता को यदि परिष्कृत कर लिया जाए, तो वही परमात्म-सत्ता में

विकसित हो सकती है। अर्थात् यदि हम अपने गुणों को निखार लें, तो हम अपने भीतर के भगवान को जान सकते हैं। समझा जाता है कि विधाता ही एकमात्र निर्माता है। ईश्वर की इच्छा के बिना पत्ता नहीं हिलता। इन दोनों बातों से कोई भ्रम में भी पड़ सकता है कि परमात्मा कहीं दूर बैठा है। इन धारणाओं के साथ इतना और जोड़ना चाहिए कि विधाता

से मिलने का सबसे निकटवर्ती स्थान अपना अंतःकरण ही है। वैसे तो ईश्वर सर्वव्यापी है, उसे कहीं भी माना जा सकता है, पर यदि दूर जाना संभव न हो, तो अपने अंतःकरण को टटोलना चाहिए। उसी में बैठे परमात्मा को हृदय खोलकर मिलने की अभिलाषा पूरी कर लेनी चाहिए। काल्पनिक उड़ाने भरने से बात कुछ नहीं बनती।

संपादकीय महिला सुरक्षा का संकट

यह हमारे लोकतंत्र की विडंबना है कि कार्यपालिका की लचर कार्यशैली के चलते गाहे-बगाहे न्यायालय को उन मामलों में हस्तक्षेप करना पड़ता है, जिनका दायित्व निभाना सरकारों का काम है। वैसे कहने को तो पूरे देश में महिलाओं व बच्चों की सुरक्षा के लिये तमाम कायदे-कानून बनाए गए हैं। लेकिन जब इन कानूनों व योजनाओं को हकीकत में अमलीजामा पहनाने की बात सामने आती है तो जवाबदेही का अंतर साफ नजर आता है। हाल के दिनों में दिल्ली व राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में महिलाओं के साथ हुए दुष्कर्म के मामलों पर स्वतः संज्ञान लेकर शीर्ष अदालत ने इस कड़वी हकीकत को उजागर कर दिया। इन मामलों में शीर्ष अदालत ने सिर्फ यही नहीं पूछा कि ये संगीन अपराध क्यों हुए, बल्कि यह भी जानना चाहिए कि इन अपराधों को रोकने के लिये बनाया गया सिस्टम क्या हकीकत में कुछ काम करता है? कोर्ट का सवाल था कि क्या वास्तव में आपातकाल में मदद करने वाली हेल्पलाइन तुरंत जवाब देती है? क्या सीसीटीवी कैमरे पूरी मुस्तैदी के साथ काम कर रहे हैं? क्या महिलाओं के लिये असुरक्षित समझी जाने वाली जगहों को पहचान करके वहां पेट्रोलिंग की जाती है? क्या महिलाओं को सुरक्षा प्रदान करने के लिये बने डेटाबेस, महिलाओं के लिये हेल्प डेस्क और जांच करने में मददगार ट्रैकिंग सिस्टम का कारगर तरीके से प्रयोग हो रहा है? शीर्ष अदालत ने इस कड़वी हकीकत को उजागर कर दिया। इन मामलों में शीर्ष अदालत ने सिर्फ यही नहीं पूछा कि ये संगीन अपराध क्यों हुए, बल्कि यह भी जानना चाा कि इन अपराधों को रोकने के लिये बनाया गया सिस्टम क्या हकीकत में कुछ काम करता है? कोर्ट का सवाल था कि क्या वास्तव में आपातकाल में मदद करने वाली हेल्पलाइन तुरंत जवाब देती है? क्या सीसीटीवी कैमरे पूरी मुस्तैदी के साथ काम कर रहे हैं? क्या महिलाओं के लिये असुरक्षित समझी जाने वाली जगहों को पहचान करके वहां पेट्रोलिंग की जाती है? क्या महिलाओं को सुरक्षा प्रदान करने के लिये बने डेटाबेस, महिलाओं के लिये हेल्प डेस्क और जांच करने में मददगार ट्रैकिंग सिस्टम का कारगर तरीके से प्रयोग हो रहा है? शीर्ष अदालत का यह सवाल तार्किक है कि जब ये सिस्टम फेल हो जाता है तो विफलता के लिये किसी की जवाबदेही तय की जाती है? निस्संदेह, अदालत ने तंत्र की दुखती रग पर हाथ रखा है। सही मायने में ये सवाल हर किसी को परेशान करने वाले हैं। यह हकीकत है कि देश में नये-नये सुरक्षा कार्यक्रमों की घोषणा करने, पोर्टल, हेल्पलाइन और कमेटियां बनाने ने तो कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी जाती है, लेकिन सवाल यह है कि क्या किसी समस्या के निस्तारण के लिये कोई सिस्टम या मैकेनिज्म बना देना ही कर्तव्यों की इतिथी मान लिया जाए? उल्लेखनीय है कि अक्सर आम लोगों द्वारा शिकायत की जाती रही है कि सुरक्षा की दृष्टि से संवेदनशील सड़कों पर स्ट्रीट लाइट की व्यवस्था नहीं होती, सीसीटीवी कैमरे पूरी तरह से काम नहीं कर रहे हैं। वहीं दूसरी ओर इस बाबत की जाँच नहीं होती है। ऐसे में देश की शीर्ष अदालत द्वारा सुरक्षा उपायों के ऑडिट, व्यवस्था की कमजोरियों की पहचान, किसी घटना के होने पर प्रतिक्रिया देने के समय और कार्यक्षमता के मूल्यांकन पर जोर देना, एक स्वागत योग्य कदम ही कहा जायेगा। सही मायने में ऐसे मामलों में सिर्फ पुलिस को ही जिम्मेदार नहीं ठहराया जाना चाहिए। ऐसे में सड़कों पर स्ट्रीट लाइट न होने पर म्युनिसिपल एजेंसियां, ट्रांसपोर्ट अथॉरिटी, प्रशासक, तकनीक उपलब्ध कराने वाले विभाग और न्याय व्यवस्था आदि सभी सुरक्षा शृंखला का हिस्सा हैं। निर्विवाद रूप से किसी भी एक स्तर पर विफलता के गंभीर परिणाम सामने आ सकते हैं। दिल्ली के बहुचर्चित निर्भया प्रकरण के चौदह साल बाद मिला यह सबक स्पष्ट करता है कि कानून और योजनाएं तो बस शुरुआत मात्र हैं। असली कसौटी तो उनके लागू होने में है। इस आलोक में किसी पार्क में जाने, बस में चढ़ने या घर पैलन जाने वाली किसी महिला को इस बात पर आशंकित नहीं होना चाहिए कि किसी संकट की स्थिति में सुरक्षा के लिये बना सिस्टम काम करेगा भी या नहीं। निस्संदेह, किसी भी नागरिक को सुरक्षा प्रदान करना राज्य की जिम्मेदारी है। सही मायने में यही जवाबदेही ही उस जिम्मेदारी को हकीकत बनाती है। निश्चयस किया जाना चाहिए कि सुप्रीम कोर्ट के सख्त निर्देश के बाद शासन-प्रशासन महिला सुरक्षा की गंभीर चिंता को संवेदनशील ढंग से महसूस करेगे। तभी संकट के समय महिलाएं आश्वस्त हो सकेंगी कि सिस्टम उनकी मदद के लिये तुरंत प्रभाव से कार्रवाई करने के लिए आगे आएगा।

कानूनों व योजनाओं को हकीकत में अमलीजामा पहनाने की बात सामने आती है तो जवाबदेही का अंतर साफ नजर आता है। हाल के दिनों में दिल्ली व राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में महिलाओं के साथ हुए दुष्कर्म के मामलों पर स्वतः संज्ञान लेकर शीर्ष अदालत ने इस कड़वी हकीकत को उजागर कर दिया। इन मामलों में शीर्ष अदालत ने सिर्फ यही नहीं पूछा कि ये संगीन अपराध क्यों हुए, बल्कि यह भी जानना चाा कि इन अपराधों को रोकने के लिये बनाया गया सिस्टम क्या हकीकत में कुछ काम करता है? कोर्ट का सवाल था कि क्या वास्तव में आपातकाल में मदद करने वाली हेल्पलाइन तुरंत जवाब देती है? क्या सीसीटीवी कैमरे पूरी मुस्तैदी के साथ काम कर रहे हैं? क्या महिलाओं के लिये असुरक्षित समझी जाने वाली जगहों को पहचान करके वहां पेट्रोलिंग की जाती है? क्या महिलाओं को सुरक्षा प्रदान करने के लिये बने डेटाबेस, महिलाओं के लिये हेल्प डेस्क और जांच करने में मददगार ट्रैकिंग सिस्टम का कारगर तरीके से प्रयोग हो रहा है? शीर्ष अदालत का यह सवाल तार्किक है कि जब ये सिस्टम फेल हो जाता है तो विफलता के लिये किसी की जवाबदेही तय की जाती है? निस्संदेह, अदालत ने तंत्र की दुखती रग पर हाथ रखा है। सही मायने में ये सवाल हर किसी को परेशान करने वाले हैं। यह हकीकत है कि देश में नये-नये सुरक्षा कार्यक्रमों की घोषणा करने, पोर्टल, हेल्पलाइन और कमेटियां बनाने में तो कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी जाती है, लेकिन सवाल यह है कि क्या किसी समस्या के निस्तारण के लिये कोई सिस्टम या मैकेनिज्म बना देना ही कर्तव्यों की इतिथी मान लिया जाए? उल्लेखनीय है कि अक्सर आम लोगों द्वारा शिकायत की जाती रही है कि सुरक्षा की दृष्टि से संवेदनशील सड़कों पर स्ट्रीट लाइट की व्यवस्था नहीं होती, सीसीटीवी कैमरे पूरी तरह से काम नहीं कर रहे होते हैं। वहीं दूसरी ओर इस बाबत की गई शिकायतें अक्सर फाइलों में उलझकर रह जाती हैं।

शासन-प्रशासन महिला सुरक्षा की गंभीर चिंता को संवेदनशील ढंग से महसूस करेंगे। तभी संकट के समय महिलाएं आश्वस्त हो सकेंगी कि सिस्टम उनकी मदद के लिये तुरंत प्रभाव से कार्रवाई करने के लिए आगे आएगा।

कुछ अलग

मैं धन्य हुआ...

कल मेरे दादा श्री का श्राद्ध था, तो तय था उनके दोष से बचने के लिए पंडित से पहले कौवा चाहिए था। सो अपने शहर के पितृपक्ष विशेष कोवा चौक पर जा पहुँचा, अपने पितर को सादर लाने। जब वहां पहुंचा तो कौवों का ठेकेदार एक मंच पर खड़ा था। उसके इधर उधर कौवे ही कौवे। अपने कौवा होने पर इकतर, गर्वित। अपने में पितर दर्शन करने हेतु अपने को भरमाते। सामने खाली रेहड़ी की सड़ी छत पर चढ़ कौवों का ठेकेदार कौवों के पितर होकर जाने से पहले उनको जरूरी हिदायत दे रहा था, ‘हे पितरों से डरने वाले समाज के इन दिनों होने वाले आदरणीय पितर कौबो। यह पक्ष हमारा है। ऐसे में मैं तुम्हारी सेप्टी के लिए तुम्हें सचेत करता हूँ कि जिस घर में मैं तुम्हें पितर बनाने का डेप्यूट कर रहा हूँ, वहां खाने पर कम, दक्षिणा पर अधिक ध्यान देना। याद रहे। हमारी संख्या कम है, और इनके पितर अधिक। ये साल भर अपने पितरों को प्रसन्न करने के बदले एक दिन में ही उन्हें साल भर का प्रसन्न करने को कोशिश करते रहें हैं।

दृष्टि कोण

सूचनाओं की सुनामी में सिकुड़ती समझ

सुबह आँख खुलते ही मोबाइल सामने होता है। रात में क्या हुआ, देश में क्या चल रहा है, दुनिया में किसने क्या कहा, सब कुछ चढ़ पला में पता चल जाता है। फिर भी दिन चढ़ने के साथ यह भरोसा नहीं बढ़ता कि हमें दुनिया पहले से ज्यादा समझ में आ रही है। उन्ते, कई बार लगता है कि खबरें बढ रही हैं और समझ सिकुड़ रही है। कभी खबर के लिए अखबार का ईंतजार होता था। अब खबरें ईंतजार नहीं करती। वे लगातार हमारे दरवाजे पर दस्तक देती रहती हैं। एक नॉटिफिकेशन हटाएए तो दूसरा सामने है। एक वीडियो खत्म नहीं होता कि दूसरा शुरू हो जाता है। कुछ देर बाद याद भी नहीं रहता कि सुबह पढ़ी गई दस खबरों में से कौन-सी वास्तव में महत्वपूर्ण थी। यहीं सूचना और समझ का फर्क सामने आता है। सूचना बताती है कि क्या हुआ,

जबकि समझ यह जानने की कोशिश करती है कि क्यों हुआ, उसका असर किस पर पड़ेगा और उसके पीछे की तस्वीर क्या है। हमारे पास सूचना ज्यादा है, लेकिन समझने के लिए समय और धैर्य कम है। सोशल मीडिया ने इस समस्या को और पेचीदा बना दिया है। किसी घटना की पूरी जानकारी सामने आने से पहले ही उसका वीडियो वायरल हो जाता है। कुछ शब्दों का शीर्षक लोगों की राय बना देता है। देखते ही देखते एक धारणा सच जैसी लगने लगती है। बाद में अगर कोई दूसरा तथ्य सामने आए तो उसे स्वीकार करना आसान नहीं होता, क्योंकि राय पहले बन चुकी होती है। गलत होना सत्य की गारंटी नहीं है। लाखों लोगों तक पहुंची कोई पोस्ट भी गलत हो सकती है और किसी जरूरी तथ्य को शायद ही कोई साझा करे। डिजिटल दुनिया की विडंबना यही है

सम्पादकीय

स्ट्रेचर पर लेटे घबराए मरीज के पास न तो इलाज के ढ़ाम की तुलना करने का समय होता है और न ही मोल-भाव करने की शक्ति

मरीज के भरोसे का सौदा करने पर हो सकती

जैसे ही कोई मरीज अस्पताल में भर्ती होता है, व्यवसाय के मानक नियम पूरी तरह भंग हो जाते हैं। स्ट्रेचर पर लेटे घबराए मरीज के पास न तो इलाज के दाम की तुलना करने का समय होता है और न ही मोल-भाव करने की शक्ति। वे अनिश्चितता के असामान्य स्तर को स्वीकार कर लेते हैं, यह यकीन करते हुए कि जो इलाज सुझाया जा रहा है, वह जरूरी है और उसका दाम वाजिब है। जब अस्पताल इस मजबूरी का फायदा उठाकर बहुत ज्यादा मुनाफा कमाने लगे, तो यह उस भरोसे को बुरी तरह ध्वस्त करने जैसा है। महाराष्ट्र खाद्य एवं औषधि प्रशासन का हालिया सर्वे इस समस्या की भयावहता को उजागर करता है। पड़ताल करने वालों ने पाया कि इंटरावेनस (आईवी) इन्फ्यूजन सेट की जो लागत अस्पताल को 11.05 रुपये पड़ती है, उसका दाम मरीज से 325 रुपये वसूला गया—यानी 2,841 प्रतिशत अधिक। 129.41 रुपये में खरीदे गए कैथेटर का अधिकतम खुदरा मूल्य 310 रुपये वसूला गया, जो 954 फीसदी अधिक है। कई तरह के आवश्यक मेडिकल सामानों पर कीमतें बहुधा 2,841 प्रतिशत तक ज्यादा पाई गईं। खाद्य एवं औषधि आयुक्त तुकाराम मुंडे ने डिफॉर्मेट ऑफ फार्मास्यूटिकल्स और नेशनल फार्मास्यूटिकल प्र्राइसिंग अथॉरिटी को पत्र लिखकर केंद्रीय समीक्षा और स्पष्ट नियमों की मांग की है, ताकि खरीद दाम और घोषित अधिकतम खुदरा मूल्य के बीच कितने अंतर की अनुमति हो, यह तय किया जा सके। अस्पताल एक वैध वाणिज्यिक संस्था की श्रेणी में आते हैं।

देश दुनिया से

शक्ति संतुलन, कूटनीति और जलवायु संकट

विश्व में अनेक स्तर पर हो रहे युद्धों, दो या अधिक देशों के पारस्परिक सशस्त्र संघर्षों तथा अन्य राजनीतिक प्रतिकूलताओं व नकारात्मक प्रतिस्पर्धाओं के बीच संपन्न संयुक्त राष्ट्र की वार्षिक महासभा में अत्यधिक हलचल रही। सन्-2014 के बाद महासभा में ऐसी हलचल प्रत्येक वर्ष हो रही है और आगामी वर्ष में तीव्र से तीव्रतम हो रही है। जब तक दुनिया में संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद के पांच स्थायी सदस्य देशों- अमरीका, चीन, फ्रांस, रूस और ब्रिटेन के देशज हित सधते रहे, तब तक महासभा का आयोजन शेष विश्व के लिए एक साधारण आयोजन हुआ करता था। किंतु जब से उक्त पांच देशों के मध्य स्वायं संचालित एवं शीघ्र पर स्थपित होने की स्पर्धा बढ़ी तथा इनके प्रतिस्पर्धी बनकर दुनिया के कुछ अन्य देश भी खड़े हुए हैं, तब से महासभा की वार्षिक बैठक आरोप-प्रत्यारोप का मंच बन गई है। पांच देशों के प्रतिस्पर्धी बनकर खड़े होने वाले देशों में सम्मिलित हैं भारत, जर्मनी, जपान, ब्राजील, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण कोरिया। विशेषकर भारत में 2014 के बाद जो शासन तंत्र स्थापित हुआ और जिस प्रकार स्वदेशी गौरव के प्रति एक तीव्र शासकीय एवं लोकतांत्रिक हलचल होनी आरंभ हुई, उस परिस्थिति में संयुक्त राष्ट्र के प्रभुत्व में देवबला बनाए रखने वाले प्रमुख पांच देशों में से अमरीका, चीन एवं ब्रिटेन को कुछ अधिक बेचैनी हो गई है। भारत, रूस एवं चीन के नेतृत्व में ब्रिक्स सहित दक्षिण एशियाई एवं मध्य पूर्वी देशों के बीच अमरीकी-यूरोपीय शासकीय प्रभुत्व को खंडित करने के लिए वैचारिक एवं व्यावहारिक स्तर पर जो नवचेतना जागृत हुई है, उसने भी विश्व को पिछले एक-डेढ़ दशक में पहले तो शीतयुद्ध में धकेला और अब उस कारण धीरे-धीरे विभिन्न स्तरों पर देशों के मध्य सशस्त्र संघर्ष भी बढ़ रहा है। जिस प्रकार विषय-समय-समय पर



शीतयुद्ध से प्रभावित रहा है, उसी प्रकार भारत के केंद्रीय कल्याणकारी भूमिका में अवतरित होने के बाद संपूर्ण विश्व में शीत-समन्वय की धारणा जड़ें जमा रही है। अर्घोषित रूप से भारत की विदेश नीति संवर्मान्य हो रही है। विदेशों में भारत के मानवतावादी सिद्धांत की प्रशंसा हो रही है। किसी भी मंच पर भारत का मत स्वायंसे विलग जगहित के लिए होता है। इस भाव को दुनिया के अधिसंख्य देश पहचान रहे हैं। भारत के शत्रुदेश भी इस भावना से भलीभांति परिचित हैं। इसीलिए वे भारतीय पराभव के लिए अनेक प्रकार के षड्यंत्रों में लिप्त हैं। महासभा के मंच पर जहां अधिसंख्य देशों एवं उनके मुखुब्द तथा प्रमुखों की अनुपस्थिति में उनके प्रतिनिधियों ने अपने-अपने हितों के रक्षायें भाषण किये तथा अपने शत्रु देश के प्रति आक्रोश से भरकर अपनी-अपनी आपत्तियां प्रकट कीं, वहीं भारतीय प्रतिनिधि विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने अत्यंत शांत होकर, संयम एवं विनीत भावना के साथ वैश्विक युद्धजन्य संघर्षों, प्राकृतिक चुनौतियों, असमान सुख-सुविधाओं के वितरण, आदि मानवीयता-केंद्रित विषयों पर धकेला और अब उस कारण धीरे-धीरे विभिन्न स्तरों पर देशों के मध्य सशस्त्र संघर्ष भी बढ़ रहा है। जिस प्रकार विषय-समय-समय पर

गुरुवार, 01 अक्टूबर, 2026हैदराबाद



परामर्श काफी नहीं होते। जो अस्पताल जान-बूझकर ज्यादा कीमत वसूलते हैं, उनके लिए अतिरिक्त लिया गया पैसा मरीजों को वापस लौटाना और भारी जुर्माना भरना अनिवार्य किया जाना चाहिए। बार-बार ऐसा करने वालों को दंड स्वरूप सरकार स्वास्थ्य बीमा पैनल से बाहर करना और निजी भुगतान नेटवर्क से कुछ समय के लिए निर्लंबित या फिर स्थायी रूप से काली सूची में डाल देना चाहिए। हालांकि, हमें कुछ मेडिकल सामानों पर वसूल जाने वाले बहुत ज्यादा मुनाफे को शेष सामान्य वस्तुओं पर भी लागू मानकर, एकमुश्त सख्त दाम नियंत्रक निजाम बनाने की गलती करने से बचना होगा। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण पर बनी संसदीय स्थायी समिति ने हाल ही में आवश्यक मेडिकल प्रक्रियाओं पर ‘कड़ी ऊपरी कीमत’ तय करने, तमाम स्टैंडर्ड मेडिकल ऑपरेशनों के लिए पैकेज रेट तय करने और मेट्रो शहरों के अस्पतालों के कमरों को किराया आपसपास के ग्री-स्टार होटलों के कमरों के किराए के बराबर करने के लिए एक कानूनी संस्था बनाने की सिफारिश की है। बेशक, समिति ने मरीजों की परेशानी को सही ढंग से समझा है, लेकिन उसके सुझाए गए उपायों से स्वास्थ्य तंत्र को भारी नुकसान पहुंचने का खराबी है। आईबी सेंट एक मानकीकृत औद्योगिक उत्पाद है, जबकि क्लीनिकल देखभाल वैसी नहीं है। एक ही

वसूली जाने वाली कीमतों में वास्तविक पारदर्शिता बनाना। प्रत्येक अस्पताल एक समान डिजिटल प्रारूप में इलाज के दाम की सूची प्रकाशित करे। पूर्व निर्धारित अस्पताल धर्ती के मामले में, मरीजों को कुल खर्च का एक अनुमान मिलना चाहिए, जिसमें व्यवसायिक फीस, जांच एवं परीक्षण, इलाज, दवाएं, उपकरण, इस्तेमाल होने वाली औसत चीजें और कर्मरों का किराया शामिल हो। यदि अंतिम बिल अनुमान से काफी ज्यादा बने, तो अस्पताल को इसकी वजह बतानी चाहिए, सिवाय उन मामलों के जहां कोई अप्रत्याशित मेडिकल स्थिति पैदा हो जाए। पारदर्शिता खास तौर पर महंगी दवाओं, इम्प्लांट और इस्तेमाल होने वाली चीजों के मामले में होनी चाहिए। द्वितीय, अनुचित मुनाफे को सही सिद्ध न कर पाने पर सख्ती से कदम उठाएं। स्टैंडर्ड दवाओं, उपकरणों और इस्तेमाल होने वाली चीजों के मामले में नियामकों को असामान्य कीमतों पर लगातार नजर रखनी चाहिए। प्रत्येक उत्पाद की अंतिम कीमत खुद तय करने की बजाय मुनाफे की तार्किक सीमा बांधना, संदर्भ मूल्य और व्यवस्थित कीमत निगरानी तंत्र ज्यादा सही तरीके हैं। लेकिन नियामक तंत्र असरदार होना चाहिए। जो अस्पताल बार-बार अनुचित चार्ज लगाते पाए जाएं, वहां जुर्माना इतना बड़ा होना चाहिए कि उनकी यह प्रवृत्ति बदल जाए। सरकारी फंड वाली योजनाओं या स्वास्थ्य बीमा नेटवर्क के तहत पैनल में शामिल होना फायदेमंद है। निरंतर गलत इस्तेमाल से यह सुविधा खतरे में पड़ सकती है। तृतीय, सरकार और बीमा कंपनियों अपनी थोक क्रय शक्ति का अधिक असरदार ढंग से प्रयोग करें। ज्यादातर बहस इस बात पर होती है कि अस्पताल मरीजों से क्या चार्ज करें। हम इस बात पर बहुत कम ध्यान देते हैं कि अस्पताल मरीजों को खरीदारी खुद दवाओं, डिवाइस और इम्प्लांट के लिए क्या खर्च चुकाते हैं। थोक खरीद का अनुभव, टाटा मेमोरियल सेंटर बताता है कि बचत की कितनी बड़ी गुंजाइश रहती है। सरकारी योजनाएं करोड़ों लोगों को स्वास्थ्य देखभाल का खर्च उठाती हैं। इस विशाल क्रय शक्ति का फायदा बेहतर दाम पाने के लिए मोल-भाव करने में उठवा जाना चाहिए।

आप नजरिया

अपने तेवरों के मनकोटिया

कांगड़ा से एक दहाड़ का खामोश होना, अपने पीछे खासी रिक्तता छोड़ गया है। पूर्व मंत्री एवं शाहपुर विधानसभा क्षेत्र से पांच बार विधायक रहे मेजर विजय सिंह मनकोटिया का निधन सियासत की एक दिलरे पारी लिख कर, साबित कर गया कि ये तेवर बार-बार याद दिकिए जाएंगे। भले ही राजनीति का इतिहास मनकोटिया के साथ इंसाफ नहीं कर सका, लेकिन वह सियासी इतिहास को निरंतर लिखते रहे। उन्होंने राजनीति की वसीयत को ही नहीं बदला, बल्कि अपने अल्फाज से इसे नए अर्थ भी दिए। मनकोटिया की शिख्यिसत के पैमाने केवल शाहपुर तक नहीं रहे, बल्कि वह कांगड़ा के नेताओं का वजन बताते रहे। हम इसे मनकोटिया बनाम वीरभद्र सिंह कांगड़ा के जोरदार व्यक्तित्वों में टकराव का गणित देखेंगे तो दो दिखआई देगा और जहां राजा का दरबार ही सरकार बनता रहा, लेकिन दिवंगत नेता ने उनको कलम से कांगड़ा का शृंगार करने का दबाव जरूर बढ़ा दिया। हिमाचल का राजनीति में डा. वाईएस परमार बनाम पंडित कांगड़ा का शृंगार करने का दबाव जरूर साहित्यिक राम के बीच एक और कांगड़ा की वाईएस परमार बनाम पंडित सलिंग राम का चेहरा तसदीक हुआ। जाहिर है कांगड़ा की राजनीति में जो भी बदलाव या नारेबाजी हुई, आजमाइश हुई, तो इसी किलेबंदी का उसके केंद्र में मनकोटिया का उभार अंगीकार हुआ। वह अपने दम के नेता और अपने मन के विधायक रहे। अंततः वीरभद्र सिंह ने भी कांगड़ा किले को दिल से जोड़ा तो इसलिए कि कहीं मनकोटिया का दबाव कम हो। बेशक वीरभद्र ने राजनीति की वास्तुकला को बदल कर मनकोटिया के सामने कई दीवारें बनाईं, लेकिन इस नेता का नायकत्व उसी के टकराव में बरकरार रहा। कांगड़ा में बरकरार रहा। कांगड़ा में शीतकालीन प्रवास की शुरुआत से शीतकालीन सत्र के आगाज का चेहरा तसदीक हुआ। जाहिर है कांगड़ा की राजनीति में जो भी बदलाव या नारेबाजी हुई, उसके केंद्र में मनकोटिया का उभार अंगीकार हुआ। वह अपने दम के नेता और अपने मन के विधायक रहे। अंततः वीरभद्र सिंह ने भी कांगड़ा किले को दिल से जोड़ा तो इसलिए कि कहीं मनकोटिया का दबाव कम हो। बेशक वीरभद्र ने राजनीति की वास्तुकला को बदल कर मनकोटिया के सामने कई दीवारें बनाईं, लेकिन इस नेता का नायकत्व उसी के टकराव में बरकरार रहा। कांगड़ा में शीतकालीन प्रवास की सत्ता के एकमात्र विरोधी धड़े रहे, इसलिए शुरुआत से विधानसभा के शीतकालीन अपने विजन की करागत नहीं दिखा पाए, फिर भी उनके व्यक्तित्व के साथ आर्मी की पृष्ठभूमि उन्हें एक्ससिव्स मैंन लीग के मंच ने भी काम किया है। कांगड़ा से यही पर राष्ट्र निर्माण, राष्ट्र भक्ति और नैतिक अंतिम जांबाज नेता रहे, जिनके आगे ऊर्जा का सोत साबित करती रही। भले ही अखंड मनकोटिया के विरासत में मिला। यह दीगर है कि मनकोटिया सीधा सा अंतर उनकी चारित्रिक अंश में अपनी सत्ता के एकमात्र विरोधी धड़े रहे, दिखाई देता रहा है। मनकोटिया आज भी इंसलिए अपने विजन की करामात नहीं दिखा पाए, फिर भी उनके व्यक्तित्व के साथ आर्मी की पृष्ठभूमि उन्हें एक्ससिव्स मैंन लीग के मंच पर राष्ट्र निर्माण, राष्ट्र भक्ति और नैतिक अंतिम जांबाज नेता रहे, जिनके आगे ऊर्जा का सोत साबित करती रही। भले ही अब मानकोटिया जैसे लोगों का होना भारतीय लोकतंत्र की बुनियादी जरूरत है। कहीं न कहीं अपनी मिसाल के खुद ही संवाहक रखे मनकोटिया अपने व्यक्तित्व की छाप छोड़ कर जा रहे हैं, ताकि कल कोई उनका अनुसरण करके सियासत का शुद्धिकरण कर सके।

एशियाई खेलों में भारत को 10वां स्वर्ण, ईरान को पीछे छोड़ा

तीरंदाजी में 3 और निशानेबाजी में 1 स्वर्ण; पदक तालिका में सातवें स्थान पर पहुंचा भारत



एशियन गेम्स 2026 मेडल टैली					
रैंक	देश	गोल्ड	सिल्वर	ब्रांज	कुल
1	चीन	150	66	57	273
2	जापान	47	76	72	195
3	साउथ कोरिया	24	29	47	100
4	उज्बेकिस्तान	16	18	19	53
5	थाईलैंड	12	10	12	34
6	वहरीन	11	5	5	21
7	भारत	10	21	29	60
8	ईरान	10	16	12	38
9	कजाखस्तान	9	16	31	56
10	उत्तर कोरिया	7	5	7	19

आइची-नागोया। भारत ने एशियाई खेलों के 11वें दिन 4 स्वर्ण पदक जीते। इनमें 3 स्वर्ण तीरंदाजी और 1 निशानेबाजी में आया। इसके साथ भारत के 10 स्वर्ण समेत कुल 60 पदक हो गए हैं। भारत ने ईरान को पीछे छोड़ते हुए पदक तालिका में सातवां स्थान हासिल कर लिया है।

बुधवार को पहला स्वर्ण महिला कंपाउंड तीरंदाजी टीम ने जीता। इसके बाद चिकिता तनिपार्थी और साहिल जाधव की जोड़ी ने मिश्रित कंपाउंड तीरंदाजी में स्वर्ण पदक जीता। निशानेबाजी में नीरू ढांडा और

किनान चेनाई की जोड़ी ने स्वर्ण दिलाया। दिन का चौथा स्वर्ण कंपाउंड तीरंदाजी के पुरुष टीम वर्ग में साहिल, गणेश और कुशल ने जीता।

तीरंदाजी में दिन के तीनों स्वर्ण भारत के नाम

भारत ने कंपाउंड तीरंदाजी के तीनों वर्गों में स्वर्ण पदक जीते। महिला टीम ने चीन को 238-234 से हराकर अपने खिताब का बचाव किया।

मिश्रित टीम के फाइनल में चिकिता और साहिल का मुकाबला दक्षिण कोरिया की पार्क जंगयून और चोई योंगही से था। भारत ने शूट-आफ में स्वर्ण अपने

नाम किया। इस जीत के साथ भारत ने लॉस एंजेलिस ओलंपिक के कंपाउंड मिश्रित टीम वर्ग के लिए कोटा भी हासिल किया।

पुरुष टीम के फाइनल में साहिल, गणेश और कुशल की टीम ने चीन को 238-237 से हराया। भारत शुरुआती चरण में 58-60 से पीछे था, लेकिन इसके बाद भारतीय तीरंदाजों ने लगातार शानदार निशाने लगाए। फाइनल के बाद के 180 में भारत ने 180 अंक हासिल किए। साहिल ने अपने सभी 8 शॉट में 10 अंक बनाए, जबकि गणेश और कुशल ने भी दबाव

के बीच लगातार 10 अंक हासिल किए।

नीरू-किनान ने निशानेबाजी में दिलाया स्वर्ण

ट्रैप मिश्रित टीम के फाइनल में नीरू ढांडा और किनान चेनाई ने भारत को स्वर्ण पदक दिलाया। भारत ने शुरुआत में 10 में से 6 निशाने साधे थे और एक समय चार टीमों में सबसे नीचे था। इसके बाद दोनों ने एक भी लक्ष्य नहीं चूका और शानदार वापसी करते हुए स्वर्ण पदक जीता।

भारत ने कतर को केवल एक अंक से पीछे छोड़ा। चीन ने कांस्य पदक जीता।

नीरू का इन खेलों में यह दूसरा स्वर्ण है। इससे एक दिन पहले उन्होंने महिला ट्रैप व्यक्तिगत वर्ग में स्वर्ण पदक जीता था।

हॉकी: दक्षिण कोरिया को 2-0 से हराकर फाइनल में भारत

भारतीय महिला हॉकी टीम ने दक्षिण कोरिया को 2-0 से हराकर फाइनल में जगह बनाई। भारत के लिए इशिका ने पेनल्टी कॉर्नर की रणनीति पर गोल किया, जबकि कप्तान सलिमा ने दूसरे हाफ में बहूत दोगुनी कर दी। अब भारत का स्वर्ण पदक मुकाबला चीन से होगा। यह मुकाबला 2 अक्टूबर को खेला जाएगा।

मुक्केबाजी में 2 कांस्य, लवलीना फाइनल में

मुक्केबाजी में प्रियंका घंघास को महिला 60 किलोग्राम सेमीफाइनल में चीन की यांग चेंग्यू से 4-1 से हार मिली। उन्हें कांस्य पदक मिला।

कपिल पोखरिया ने पुरुषों के 90 किलोग्राम सेमीफाइनल में उज्बेकिस्तान के तुराबेक खाबिबुल्लाएव के खिलाफ 4-1 से हार के बाद कांस्य पदक मिला। वहीं, लवलीना बोर्गोहेन ने महिला 75 किलोग्राम सेमीफाइनल में कजाकिस्तान की नताल्या बोंगदानोवा

को 3-2 से हराकर फाइनल में जगह बनाई।

कुश्ती: सुनील कुमार को कांस्य

सुनील कुमार ने पुरुषों के ग्रीको-रोमन 87 किलोग्राम वर्ग में कांस्य पदक जीता। सेमीफाइनल में जापान के ताइजो योशिदा से 11-0 की हार के बाद उन्होंने कांस्य पदक मुकाबले में फिलीपींस के कैलम रॉबर्ट्स को 9-0 से हराया। यह हांगझोउ के बाद सुनील का लगातार दूसरा एशियाई खेल कांस्य पदक है। वह एशियाई खेलों में ग्रीको-रोमन कुश्ती के दो पदक जीतने वाले पहले भारतीय बने।

स्क्वाश में दोनों भारतीय टीमों ने पदक पक्का किया

भारतीय महिला स्क्वाश टीम ने सिंगापुर को 2-0 से हराकर सेमीफाइनल में जगह बनाई और पदक पक्का किया। तन्वी खन्ना ने वाई लिन ऑ योंग को 3-1 और अनाहत सिंह ने वाई यान ऑ योंग को 3-0 से हराया।

पुरुष टीम ने कुवैत को 2-0 से हराकर सेमीफाइनल में जगह बनाई। वीर छत्रानी ने बांदेर अलमोगरेबी को 3-1 और अभय सिंह ने अम्मार अल-तमिमी को 3-0 से हराया। अब गत चैंपियन भारत का सामना मलेशिया से होगा।

टेनिस: सुमित कार्टर फाइनल में

सुमित नागल ने पुरुष एकल के तीसरे दौर में उज्बेकिस्तान के सर्गेई फोमिन को 6-3, 6-2 से हराकर कार्टर फाइनल में जगह बनाई। अब उनका मुकाबला चीन के वू यीबिंग से होगा।

हालांकि, पुरुष युगल में युकी भांबरी और धक्षिणेश्वर सुरेश की जोड़ी कार्टर फाइनल में चीनी ताइपे की हो चैनजुई-ह्सू यू-ह्सिओउ जोड़ी से 6-7 (5-7), 3-6 से हार गई।

न्यूज़ ब्रीफ

एशियन खेल 2026: लवलीना बोर्गोहेन फाइनल में, बोंगदानोवा को 3-2 से हराया

आइची-नागोया। भारत की स्टार मुक्केबाज लवलीना बोर्गोहेन ने एशियन खेल 2026 में महिलाओं के 75 किलोग्राम वर्ग के फाइनल में जगह बना ली है। निशियो जिम्नेजियम में खेले गए सेमीफाइनल में लवलीना ने कजाकिस्तान की नताल्या बोंगदानोवा को कड़े मुकाबले में 3-2 के स्प्लिट डिसेंजन से हराया। लवलीना ने मुकाबले की शुरुआत उम्मीद के मुताबिक नहीं की और पहला राउंड 2-3 से गंवा दिया। हालांकि, भारतीय मुक्केबाज ने दूसरे राउंड में शानदार वापसी की। सभी पांच जर्जों ने दूसरे राउंड में लवलीना के पक्ष में 10 अंक दिए, जिससे उन्होंने मुकाबले पर अपनी पकड़ मजबूत कर ली। बोंगदानोवा ने तीसरे राउंड में भी 3-2 से बहूत बनाई, लेकिन शुरुआती दो राउंड में लवलीना की बढ़त को पार करने के लिए यह पर्याप्त नहीं था। भारतीय मुक्केबाज ने कुल स्कोर के आधार पर मुकाबला अपने नाम करते हुए फाइनल का टिकट कटाया। सेमीफाइनल से पहले लवलीना ने दक्षिण कोरिया की सेओंग सुयोन को 5-0 के सर्वसम्मत फैसले से हराकर अंतिम बार में जगह बनाई थी। अब लवलीना की नजर एशियन खेल में अपने पदक का रंग बदलने पर होगी। उन्होंने तीन साल पहले हांगझोउ एशियन खेल में मिडिलवेट वर्ग में रजत पदक जीता था। इस बार वह स्वर्ण पदक के लिए रिंग में उतरेगी। लवलीना ने इस साल राष्ट्रमंडल खेलों में भी रजत पदक जीता था। उन्हें फाइनल में आस्ट्रेलिया की एमा-स्पू ग्रीनट्री के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा था।

वित्था ने एशियाई खेलों में दो पदक जीतकर उषा का रिकार्ड तोड़ा



आइवी। भारत की वित्था रामराज ने जापान में जारी एशियाई खेलों 2026 में दो पदक जीतकर दिग्गज धाविका पी टी उषा का रिकार्ड तोड़ दिया। तमिलनाडु के कोयंबटूर की इस एथलीट ने न केवल दो प्रतिष्ठित पदक अपने नाम किए, बल्कि महान एथलीट उषा का 42 साल पुराना राष्ट्रीय रिकार्ड भी ध्वस्त कर दिया। कड़ी मेहनत और अटूट लगन से ये सफलता हासिल कर वित्था ने युवाओं के लिए उदाहरण पेश किया है। वित्था ने महिलाओं की 400 मीटर बाधा दौड़ में शानदार प्रदर्शन करते हुए कांस्य पदक जीता। इस स्पर्धा में, संयुक्त अरब अमीरात की मरियम करीम ने 54.31 सेकंड के खेलों के रिकार्ड समय के साथ स्वर्ण पदक जीत जबकि कजाकिस्तान की एडेलिना जेम्स ने 54.58 सेकंड के व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ समय के साथ ही रजत पदक अपने नाम किया। इससे पहले, वित्था एशियाई खेलों में भारत के लिए पहला पदक जीतने वाली चार गुणा 400 मीटर मिश्रित रिले स्पर्धा की टीम का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा थीं, जहाँ भारतीय टीम ने रजत पदक जीता। वित्था के लिए 400 मीटर बाधा दौड़ का कांस्य पदक विशेष महत्व रखता है, क्योंकि इस दौड़ में उन्होंने अपना सर्वश्रेष्ठ व्यक्तिगत प्रदर्शन 54.75 सेकंड का समय निकालकर ये हासिल किया था। इससे वह 1984 के लास एंजेलिस ओलंपिक में उषा द्वारा बनाए गए 55.42 सेकंड के राष्ट्रीय रिकार्ड से आगे निकल गयी हैं।

एशियन खेल 2026: सुनील कुमार सेमीफाइनल में हारे, अब कांस्य के लिए होगी चुनौती

आइवी-नागोया। भारतीय पहलवान सुनील कुमार को एशियन खेल 2026 में पुरुषों के ग्रीको-रोमन 87 किलोग्राम वर्ग के सेमीफाइनल में जापान के ताइजो योशिदा के खिलाफ तकनीकी श्रेष्ठता के

406 रन का रिकॉर्ड लक्ष्य 39 गेंद शेष रहते हासिल, शुभमन गिल और रोहित शर्मा ने वेस्टइंडीज को चटाई धूल



गुवाहाटी। भारत ने एकदिवसीय क्रिकेट इतिहास का दूसरा सबसे बड़ा लक्ष्य हासिल कर नया रिकॉर्ड बनाया। वेस्टइंडीज के खिलाफ गुवाहाटी में भारत के सामने 406 रनों का लक्ष्य था। इतने बड़े स्कोर के बावजूद भारतीय टीम एक बार भी दबाव में नजर नहीं आई। शुभमन गिल की कप्तानी वाली टीम ने 44वें ओवर में ही वेस्टइंडीज को 8 विकेट से हरा दिया। एकदिवसीय क्रिकेट इतिहास में यह केवल दूसरा मौका है, जब किसी टीम ने 400 से अधिक रनों का लक्ष्य हासिल कर जीत दर्ज की है। इससे पहले दक्षिण अफ्रीका ने 435 रनों का लक्ष्य हासिल किया था। इस जीत के साथ भारत ने तीन मैचों की शृंखला में 2-0 की अजेय बढ़त बना ली है।

शुभमन गिल ने जड़ा रिकॉर्ड दोहरा शतक

भारत ने इससे पहले अपना सबसे बड़ा लक्ष्य हासिल करते हुए 2013 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 360 रन बनाए थे। इस मुकाबले में कप्तान शुभमन गिल और रोहित शर्मा भारत की जीत के नायक रहे। गिल ने शानदार दोहरा शतक जड़ा। वह एकदिवसीय क्रिकेट में लक्ष्य का पीछा करते हुए सबसे बड़ी पारी खेलने वाले बल्लेबाज भी बन गए हैं। गिल ने 132 गेंदों पर नाबाद 223 रन बनाए। उनकी पारी में 28 चौके और 8 छक्के शामिल रहे।

रोहित शर्मा ने 75 गेंदों पर 10 चौकों और 6 छकों की मदद से 101 रन बनाए। गिल और रोहित के बीच 150 गेंदों पर 255 रनों की शानदार साझेदारी हुई। विराट कोहली ने 19 गेंदों पर 29 रन बनाए, जबकि रतुराज गायकवाड़ ने 37 गेंदों पर नाबाद 31 रन की पारी खेली।

गिल ने बनाए कई शानदार रिकॉर्ड

शुभमन गिल एकदिवसीय क्रिकेट में लक्ष्य का पीछा करते हुए 223 रनों की सबसे बड़ी पारी खेलने वाले बल्लेबाज बन गए। 223 रन एकदिवसीय क्रिकेट में किसी बल्लेबाज की तीसरी सबसे बड़ी

व्यक्तिगत पारी है। रोहित शर्मा ने 264 और माटिन गप्टिल ने 237 रन बनाए हैं।

शुभमन गिल एकदिवसीय क्रिकेट में सबसे बड़ी व्यक्तिगत पारी खेलने वाले कप्तान बन गए। इससे पहले यह रिकॉर्ड वीरेंद्र सहवाग के नाम था, जिन्होंने 219 रन बनाए थे।

एकदिवसीय क्रिकेट में शुभमन गिल 117 गेंदों पर दो-हरा शतक लगाने वाले सबसे तेज बल्लेबाज बन गए।

शुभमन गिल, रोहित शर्मा के बाद एकदिवसीय क्रिकेट में एक से अधिक दोहरे शतक लगाने वाले दूसरे भारतीय क्रिकेटर बन गए।

भारत ने 29.1 ओवर में अपने 300 रन पूरे किए। यह एकदिवसीय क्रिकेट में किसी टीम द्वारा सबसे तेज 300 रन पूरे करने का रिकॉर्ड है।

वेस्टइंडीज के तीन बल्लेबाजों ने जड़े शतक

जॉन कैपबेल, कप्तान शाई होप और आमिर जंगू के शतकीय पारियों के दम पर वेस्टइंडीज ने 7 विकेट पर 405 रन बनाए। यह एकदिवसीय क्रिकेट में वेस्टइंडीज का सबसे बड़ा टीम स्कोर था।

टॉस गंवाकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी वेस्टइंडीज की सलामी जोड़ी जॉन कैपबेल और कीसी कार्टी पहले विकेट के लिए केवल 37 रन की साझेदारी कर सकी। कार्टी 9 रन बनाकर आउट हुए, जिसके बाद कप्तान शाई होप ने मोर्चा संभाला।

होप ने जॉन कैपबेल के साथ दूसरे विकेट के लिए 79 गेंदों में 110 रन की साझेदारी करते हुए टीम का स्कोर 100 रन के पार पहुंचाया। कैपबेल 68 गेंदों में 5 छकों और 9 चौकों की मदद से 101 रन बनाकर आउट हुए। शाई होप ने आमिर जंगू के साथ तीसरे विकेट के लिए 131 गेंदों में 182 रन की साझेदारी कर टीम को 329 रन के स्कोर तक पहुंचाया। होप 94 गेंदों में 104 रन बनाकर आउट हुए।

शेरेफन रदरफोर्ड पांचवें नंबर पर बल्लेबाजी के लिए उतरे, लेकिन बिना खाता खोले पवेलियन लौट गए। आमिर जंगू 77 गेंदों में 3 छकों और 13 चौकों की मदद से 114 रन बनाकर आउट हुए। इनके अलावा रोस्टन चेज ने 25 गेंदों में नाबाद 29 रन की पारी खेली।

भारत की ओर से गुरनूर बरार, रविंद्र जडेजा और कुलदीप यादव ने 2-2 विकेट लिए, जबकि प्रसिद्ध कृष्णा को 1 विकेट मिला।

एशियन खेल 2026: सुमित नागल क्वार्टर फाइनल में पहुंचे, फोमिन को सीधे सेटों में हराया



आइवी-नागोया। भारत के टेनिस खिलाड़ी सुमित नागल ने एशियन खेल 2026 में पुरुष एकल के क्वार्टर फाइनल में जगह बना ली है। नागल ने राउंड आफ 16 के मुकाबले में उज्बेकिस्तान के सर्गेई फोमिन को सीधे सेटों में 6-3, 6-2 से हराया। नागल ने पूरे मुकाबले में नियंत्रण बनाए रखा। उन्होंने पहले सेट में 6-3 से जीत दर्ज की और दूसरे सेट में भी अपनी लय बरकरार रखते हुए 6-2 से मुकाबला अपने नाम कर लिया। इस जीत के साथ नागल पदक पक्का करने से अब सिर्फ एक जीत दूर हैं। फोमिन के खिलाफ यह नागल की लगातार तीसरी जीत है। दोनों खिलाड़ियों के बीच अब तक हुए तीनों मुकाबले भारतीय खिलाड़ी ने जीते हैं। क्वार्टर फाइनल में नागल का सामना चीन के वू यीबिंग से होगा। यह मुकाबला 1 अक्टूबर को खेला जाएगा।

एशियन खेल हाकी: सेमीफाइनल में आमने-सामने होंगे भारत-पाकिस्तान, रोमांच होगा चरम पर

नई दिल्ली

एशियन खेल 2026 में गुरुवार को भारतीय पुरुष हाकी टीम का सामना चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान से होगा। दोनों टीमों टूर्नामेंट के पहले सेमीफाइनल में आमने-सामने होंगी, जहां जीतने वाली टीम स्वर्ण पदक के मुकाबले में पहुंचेगी। दूसरा सेमीफाइनल मलेशिया और दक्षिण कोरिया के बीच खेला जाएगा।

गत चैंपियन भारत ने पुल चरण में शानदार प्रदर्शन करते हुए पांचों मुकाबले जीते और पुल-ए में शीर्ष स्थान हासिल किया। भारत ने अभियान की शुरुआत इंडोनेशिया को 13-1 से हराकर की। इसके बाद श्रीलंका को 16-1, दक्षिण कोरिया को 8-2, मेजबान जापान को 2-0 और बांग्लादेश को 10-0 से शिकस्त दी।

भारतीय टीम की आक्रमण पंक्ति ने अबतक शानदार प्रदर्शन किया है। दिग्विजय सिंह नौ गोल के साथ टूर्नामेंट के संयुक्त रूप से दूसरे सर्वश्रेष्ठ स्कोरर हैं। अभिषेक और कप्तान हरमनप्रीत सिंह के नाम आठ-आठ गोल हैं। पेनल्टी कॉर्नर में हरमनप्रीत की ड्रैग-फ्लिक भारत का अहम हथियार रही है।

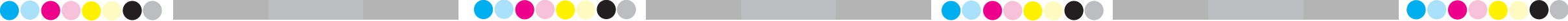
वहीं, पाकिस्तान पुल-बी में शीर्ष पर रहते हुए भारत से फाइनल में भिड़ने की स्थिति में था लेकिन मलेशिया के खिलाफ 4-5 की हार के



कारण उसे दूसरे स्थान से संतोष करना पड़ा। पाकिस्तान ने थाईलैंड को 9-0, उज्बेकिस्तान को 5-1, चीन को 3-0 और ओमान को 7-2 से हराया। पाकिस्तान के लिए सुफियान खान सबसे बड़ा खतरा होंगे। पेनल्टी कॉर्नर पर शानदार प्रदर्शन कर रहे सुफियान के नाम अब तक 11 गोल हैं और वह टूर्नामेंट के शीर्ष स्कोरर हैं। ऐसे में सुफियान और भारतीय कप्तान हरमनप्रीत के बीच पेनल्टी कॉर्नर की जंग मुकाबले का अहम पहलू हो सकती है। राजकुमार पाल बाहर, निलकंठ शर्मा टीम में भारत को सेमीफाइनल से पहले बड़ा

झटका लगा है। बांग्लादेश के खिलाफ आखिरी पूल मुकाबले में राजकुमार पाल के बाएं अंगूठे में फ्रैक्चर हो गया, जिसके कारण वह टूर्नामेंट से बाहर हो गए हैं। उनकी जगह रिजर्व खिलाड़ी नीलकंठ शर्मा को टीम में शामिल किया गया है।

मुख्य कोच क्रेग मूरटन ने कहा कि राजकुमार का चोटिल होना दुर्भाग्यपूर्ण है, लेकिन नीलकंठ के आने से आने से टीम को अनुभवी खिलाड़ी का विकल्प मिला है। नीलकंठ ओलंपिक और विश्वकप जैसे बड़े टूर्नामेंट में भारत का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं।



हिंदी परखवाड़ा समापन समारोह आयोजित

दक्षिणी क्षेत्र कृषि मशीनरी प्रशिक्षण एवं परीक्षण संस्थान में हुआ आयोजन

अनंतपुर, 29 सितंबर (शुभ लाभ ब्यूरो)। दक्षिणी क्षेत्र कृषि मशीनरी प्रशिक्षण एवं परीक्षण संस्थान में 29 सितंबर 2026 को हिंदी परखवाड़ा का समापन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर सहकारिता मंत्रालय, भारत सरकार की हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य श्री एस. गैबुवली को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया।

मां सरस्वती वंदन एवं दीप प्रज्वलन से हुआ शुभारंभ

कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती वंदन एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। समापन समारोह में हिंदी आशु भाषण एवं हिंदी गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में कुल 13 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतियोगिताओं को हिंदी भाषी एवं हिंदीतर भाषी के दो अलग-अलग वर्गों में आयोजित किया गया।

मुख्य अतिथि का किया स्वागत
मंचासीन अधिकारी श्री प्रमोद यादव,



कृषि अभियंता, श्री रोहित शीवास्तव, प्रशासनिक अधिकारी एवं डॉ. सन्दीप

चुघ, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने मुख्य अतिथि श्री एस. गैबुवली का स्वागत

सनतनगर में भाजपा की बैठक आयोजित



हैदराबाद, 30 सितंबर (शुभ लाभ ब्यूरो)

सनतनगर में भाजपा की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा नेता शशिधर रेड्डी एवं जिला महामंत्री निरंजन जी उपस्थित रहे। शशिधर रेड्डी ने बैठक में उपस्थित सभी मतदाताओं की समस्याओं को सुना और उनका समाधान समझाया। इस दौरान जिन लोगों के अभी तक मतदाता पहचान पत्र नहीं बने हैं, उनके मतदाता पहचान पत्र बनवाने के लिए फार्म-6 वितरित किए गए। बैठक में डिबीजन अध्यक्ष कांति, वरिष्ठ नेता दयानंद, सुनील, महेश, श्रीनिवास, मुरली, वामशी कृष्णा, उमा, सत्यनारायण एवं अन्य उपस्थित रहे।



केबीआर पार्क में इच्छापूर्ति गणेशजी की पूजा-अर्चना एवं आरती करते हुए राजेंद्र कुमार अग्रवाल, सुरेंद्र कुमार अग्रवाल, गोपाल बलदवा, विडुलदास अग्रवाल बड़े गांव वाले, प्रमोद कुमार सरायवाला, अशोक लाखोटिया, राम गोयल, सुरेश कुमार अग्रवाल, सीए रमाकांत इनानी, राजेंद्र रेड्डी, विजय कुमार ताम्बी, राहुल सिंघल, संध्या रानी, विजया लक्ष्मी रेड्डी एवं अन्य।



ऋषि श्रृंग भवन में ओझा परिवार द्वारा आयोजित कार्यक्रम में हरिकिशन ओझा, विष्णु ओझा, अरुण ओझा व डॉ. आनंद ओझा को कार्यक्रम की शुभकामनाएं प्रदान करते हुए रामदेव नागला, भगवानदास नागला तिवारी, रामप्रकाश नागला, रूपचंद व्यास, श्रीनिवास पंडित, कांतिलाल नागला, रंगलाल ओझा, कन्हैयालाल ओझा, विष्णुगोपाल तिवारी, अनिल जायलवाल, ओमनारायण पंडित व अन्य।

प्रथम पृष्ठ का शेष...

इंडिया में...

इंडिया गठबंधन की बैठक में गैर-भाजपा दलों को जोड़ने पर भी चर्चा हुई। इसमें बीजू जनता दल, बीआरएस और वाईएसआर कांग्रेस जैसे दलों को भी साथ लाने की कोशिश करने की बात सामने आई। हालांकि, कांग्रेस के साथ समस्या यह है कि वह राज्यों में जिन पार्टियों के खिलाफ चुनाव लड़ती है, उन्हीं का समर्थन केंद्र में या संसद में भाजपा के खिलाफ लड़ाई के लिए चाहती है। ओडिशा में बीजू जनता दल, तेलंगाना में केसीआर की पार्टी या आंध्र प्रदेश में जगन मोहन रेड्डी की पार्टी इसके उदाहरण हैं।

आम आदमी पार्टी और कांग्रेस के रिश्ते भी सहज नहीं रहे हैं। हरियाणा में अपनी हार के लिए कांग्रेस अरविंद केसरीवाल को जिम्मेदार मानती है। दिल्ली कांग्रेस के लिए पहले से ही चुनौतीपूर्ण क्षेत्र रहा है और अब पंजाब में भी दोनों दलों के बीच राजनीतिक मुकाबला है। दरअसल, राज्यों में एक-दूसरे के खिलाफ लड़ना और दिल्ली में साथ रहना दोनों बातें एक साथ चलने में मुश्किल पैदा करती हैं। कहीं न कहीं अविश्वास की स्थिति बनी रहती है। यही वजह है कि क्षेत्रीय दल कांग्रेस से बराबर 'बड़ा दिल' दिखाने की बात करते रहते हैं। जब तक ममता बनर्जी पश्चिम बंगाल की सत्ता में थीं, तब उनका भी कांग्रेस के प्रति यही व्यवहार रहा था।

इंडिया गठबंधन फिर क्यों हुआ सक्रिय?

चुनाव आयोग और एसआईआर को लेकर सामने आए घटनाक्रम ने इंडिया गठबंधन के दलों को फिर से एक मंच पर ला दिया है। यही वजह है कि देशभर में आंदोलन को लेकर सभी प्रमुख घटक दलों के बीच सहमति बनी है। गठबंधन ने चुनाव आयोग और चुनावी प्रक्रिया से जुड़े मुद्दों पर राजनीतिक और कानूनी स्तर पर लड़ाई आगे बढ़ाने का फैसला किया है।

घोषित कार्यक्रमों में 2 से 8 अक्टूबर तक जिला स्तर पर 'सेव डेमोक्रेसी' मार्च और प्रदर्शन, 6 अक्टूबर को चुनाव आयोग तक मार्च तथा 1 नवंबर को दिल्ली में बड़ी रैली शामिल है। गठबंधन ने एसआईआर से जुड़े मामलों के जल्द निपटारे की मांग भी की है।

होटल हत्या ...

आरोप है कि श्रीनिवास ने टीवी की आवाज तेज कर दी और इसी दौरान कमरे में लगे पर्दे के रॉड से शिरिषा के सिर पर जोरदार वार कर दिया, जिससे उसकी मौत हो गई।

आरोप है कि अगले दिन श्रीनिवास अकेले होटल से निकल गया। उसने होटल कर्मचारियों से कहा कि शिरिषा नाराज करने के बाद चेकआउट कर जाएगी। काफी समय बीत जाने के बावजूद जब शिरिषा कमरे से बाहर नहीं आई तो होटल कर्मचारियों को संदेह हुआ। उन्होंने दूसरी चाबी से कमरा खोला। अंदर बेड पर शिरिषा को मृत अवस्था में देखकर कर्मचारियों ने तत्काल पुलिस को सूचना दी।

सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और घटनास्थल का निरीक्षण किया। प्रारंभिक जांच के बाद पुलिस ने आरोपी श्रीनिवास की तलाश शुरू कर दी

है। पुलिस हत्या के कारणों, दोनों के संबंध और घटनाक्रम से जुड़े अन्य पहलुओं की जांच कर रही है। फिलहाल मामले में आरोपी के पकड़े जाने और पुलिस जांच पूरी होने के बाद ही हत्या की पूरी वजह तथा घटनाक्रम की पुष्टि हो सकेगी।

3 महिला ...

वह 1996 में सुप्रीम कोर्ट की अधिवक्ता बनीं और 2015 में वरिष्ठ अधिवक्ता नामित हुईं। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट में कई महत्वपूर्ण मामलों की पैरवी की। साथ ही मध्यस्थता और पंचाट के क्षेत्र में भी काम किया। 2 जून 2026 को उन्हें सीधे बार से सुप्रीम कोर्ट का जज नियुक्त किया गया। वह सुप्रीम कोर्ट की बार से सीधे जज बनने वाली दूसरी महिला हैं।

सुप्रीम कोर्ट में जजों की संख्या 37 करने वाला

विधेयक मानसून सत्र में हुआ पारित

केंद्रीय कैबिनेट ने 5 मई को सुप्रीम कोर्ट में जजों की संख्या 33 से बढ़ाकर 37 करने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी थी। सरकार ने मानसून सत्र में विधेयक पेश किया, जिसे दोनों सदनों से पारित किया गया। संविधान के अनुच्छेद 124(1) के तहत सुप्रीम कोर्ट में जजों की संख्या बढ़ाने का अधिकार संसद के पास है।

2019 में आखिरी बार बढ़ी थी संख्या

इससे पहले 2019 में सुप्रीम कोर्ट में जजों की संख्या 31 से बढ़ाकर 33 की गई थी। वहीं, 2008 में जजों की संख्या 26 से बढ़कर 31 हुई थी। शुरुआत में सुप्रीम कोर्ट में मुख्य न्यायाधीश के अलावा सिर्फ 10 जजों की व्यवस्था थी।

प्लेन ...

यह मांग बुधवार सुबह हुई घटना के बाद की गई है। खबरों के मुताबिक, रोग ने नागरिक उड्डयन प्राधिकरण से यह जांच करने को कहा है कि संयुक्त अरब अमीरात ने इजरायल के साथ हुए विमान समझौते का उल्लंघन किया है या नहीं। बता दें कि इस समझौते के तहत केवल उन्हीं देशों के पायलट इजरायल में उतर सकते हैं, जिनके इजरायल के साथ कूटनीतिक संबंध हैं।

फ्लाइट में क्या हुआ था?

दुबई से इजरायल के तेल अवीव जा रही फ्लाईदुबई की उड़ान एफजेड1073 में यह घटना हुई। बोइंग 737 मैक्स 8 विमान ने सबसे पहले 7700 स्क्वां कोड भेजा। यह सामान्य आपात स्थिति का संकेत है। इसके कुछ ही सेकंड बाद विमान से 7500 कोड भेजा गया। यह कोड विमान के अपहरण या विमान में किसी तरह के गैरकानूनी हस्तक्षेप की आशंका को दर्शाता है। इसके बाद विमान का रास्ता बदला गया और आखिर में उसने सऊदी अरब के ताबुक एयरपोर्ट पर सुरक्षित लैंडिंग की।

इजरायली मीडिया के मुताबिक, इमरजेंसी सिग्नल किसी बाहरी अपहरण की वजह से नहीं, बल्कि दोनों पायलटों के बीच हुए कथित झगड़े के बाद भेजे गए थे। शुरुआती रिपोर्टों में दावा किया गया कि पायलट और सह-पायलट के बीच कॉकपिट में हिंसक झड़प हुई थी। इजरायली मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक, विमान

में मौजूद एक पायलट ने कथित तौर पर आत्महत्या करने की कोशिश की। दावा किया गया है कि उसने करीब 30 हजार फीट की ऊंचाई से विमान को तेज गति से नीचे लाने की कोशिश की। वहीं, दूसरे पायलट ने उसे रोकने की कोशिश की, जिसके बाद यह संघर्ष हुआ। हालांकि, इन दावों की स्वतंत्र पुष्टि अभी तक नहीं हुई है।

बाली...

देवराज मलिक के मुताबिक, 16 सितंबर को हाईकोर्ट में दोनों पक्षों को सुना गया। अदालत ने आयुष के बालिंग होने के आधार पर उसे अपनी इच्छा के अनुसार रहने की स्वतंत्रता दी। इसके बाद आयुष अपने घर नहीं लौटा। पिता का आरोप है कि हाईकोर्ट के आदेश के बाद सुल्तान कारी आयुष को अपने साथ किसी अज्ञात स्थान पर ले गया। इसके बाद से परिवार को आयुष के बारे में कोई जानकारी नहीं है। देवराज मलिक ने अपनी शिकायत में कहा है कि उनका बेटा अब तक घर वापस नहीं आया है। हालांकि, हाईकोर्ट के आदेश के मुताबिक आयुष को अपनी इच्छा के अनुसार रहने की स्वतंत्रता दी गई थी। अब पुलिस नई प्राथमिकी में लगाए गए आरोपों की जांच कर रही है और यह पता लगाने की कोशिश कर रही है कि आयुष इस समय कहाँ है।

देवराज मलिक ने पुलिस को दी तहरीर में आरोप लगाया कि आयुष के घर वापस नहीं आने से उसकी दवा की दुकान का कारोबार भी प्रभावित हो रहा है। उनका कहना है कि परिवार को इससे आर्थिक नुकसान उठाना पड़ रहा है। देवराज के अनुसार, 18 सितंबर को सुल्तान कारी उनके पास आया था। पिता का आरोप है कि उस दौरान सुल्तान कारी ने उन्हें धमकी दी और कहा कि आयुष का दोबारा धर्म परिवर्तन करा दिया गया है। शिकायत में देवराज मलिक ने आरोप लगाया है कि उनसे और उनके परिवार से भी इस्लाम धर्म अपनाने के लिए दबाव बनाया गया। इसके साथ ही कुछ संपत्ति सुल्तान कारी और कुछ संपत्ति दारुल उल्म देवबंद के मुफ्ती अब्दुल्ला के नाम करने का दबाव डालने का आरोप लगाया गया है।

देवराज मलिक ने पुलिस को दी शिकायत में आरोप लगाया कि उनकी बात नहीं मानने पर उन्हें, उनकी पत्नी और बेटे को जान से मारने की धमकी दी गई। शिकायत में पूरी संपत्ति पर कब्जा करने की बात कहे जाने का भी आरोप लगाया गया है। देवराज ने यह आशंका भी जताई है कि सुल्तान कारी और मुफ्ती अब्दुल्ला अपने अन्य साथियों के साथ मिलकर उनके बेटे और परिवार के साथ कोई अग्रिय घटना कर सकते हैं। पुलिस ने फिलहाल इन आरोपों को शिकायत के आधार पर दर्ज किया है। मामले की जांच जारी है और आरोपों की सत्यता की जांच का रही है।

पुलिस के जांच अधिकारी धर्मेन्द्र गौतम के अनुसार, दवा कारोबारी देवराज मलिक की तहरीर के आधार पर सुल्तान कारी और मुफ्ती अब्दुल्ला के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है। पुलिस अब शिकायत में लगाए गए आरोपों की जांच कर रही है। साथ ही

आयुष के संबंध में भी जानकारी जुटाई जा रही है। पुलिस का कहना है कि जांच के बाद ही पूरे मामले की स्थिति स्पष्ट हो सकेगी।

पहले भी दर्ज हो चुका है मुकदमा

आयुष मलिक धर्मांतरण प्रकरण में यह पहला मुकदमा नहीं है। इससे पहले 6 जून को देवराज मलिक ने शामली शहर कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराया था। उस शिकायत में आरोप लगाया गया था कि संपत्ति हड़पने के उद्देश्य से चांदनी कुरैशी ने अपने परिवार के साथ मिलकर आयुष को प्रेमजाल में फंसाया और उसका धर्मांतरण कराया। इस मामले में चांदनी कुरैशी, उसके पिता इस्लाम कुरैशी और तीन मौलवियों समेत कुल आठ लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की गई थी। पुलिस ने चांदनी कुरैशी और उसके पिता समेत तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया था। बाद में पुलिस ने न्यायालय में आरोपपत्र दाखिल किया था। इसके बाद आरोपियों को अदालत से जमानत मिल गई थी।

पूरे मामले में सुल्तान कारी ने आयुष को अपना दोस्त बताते हुए हाईकोर्ट में याचिका दाखिल की थी। याचिका में आरोप लगाया गया था कि आयुष को उसके पिता द्वारा बंधक बनाकर रखा गया है। इसी मामले की सुनवाई के दौरान 16 सितंबर को आयुष और उसके पिता अदालत में पेश हुए थे। अदालत ने आयुष के बालिंग होने के आधार पर उसे अपनी इच्छा के अनुसार रहने की स्वतंत्रता दी। अब हाईकोर्ट के आदेश के बाद आयुष का घर वापस नहीं लौटना और उसके पिता की ओर से सुल्तान कारी और मुफ्ती अब्दुल्ला के खिलाफ नई एफआईआर दर्ज कराए जाने से मामला एक बार फिर चर्चा में है।

आयुष कहाँ है, जांच के बाद होगा साफ

फिलहाल इस मामले में सबसे बड़ा सवाल यही है कि हाईकोर्ट से अपनी इच्छा के अनुसार रहने की स्वतंत्रता मिलने के बाद आयुष कहाँ गया और वह अपने घर क्यों नहीं लौटा। पिता ने अपनी शिकायत में सुल्तान कारी और मुफ्ती अब्दुल्ला पर कई गंभीर आरोप लगाए हैं।

पुलिस ने दोनों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस शिकायत में लगाए गए आरोपों की सत्यता की जांच कर रही है। आयुष की स्थिति और उसके साथ क्या हुआ, इसकी तस्वीर भी जांच आगे बढ़ने के बाद ही स्पष्ट हो सकेगी। फिलहाल पुलिस का कहना है कि मामले की जांच जारी है और नई प्राथमिकी में लगाए गए आरोपों के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

नो...

चार दिन पहले कैट ने नो यूपीआई डे मनाने की मीडिया रिपोर्टों को गलत बताया था। इसके दो दिन पहले खबरें आई थीं कि देशभर में व्यापारी और दुकानदार 2 अक्टूबर को यूपीआई से भुगतान नहीं लेंगे। सरकार के प्रस्तावित यूपीआई लेनदेन शुल्क के विरोध में व्यापारी संगठनों ने इस दिन 'नो यूपीआई डे' मनाने का ऐलान किया था।

इस पर महाराष्ट्र चैंबर ऑफ कॉमर्स, इंडस्ट्री एंड

एग्रीकल्चर (एमएसीसीआईए) के अध्यक्ष रवींद्र मंगवे ने कहा था कि यह आंदोलन सिर्फ महाराष्ट्र तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि देशभर के 500 से ज्यादा प्रमुख व्यापारी संगठन इसमें हिस्सा लेंगे।

व्यापारी संगठनों का यूपीआई शुल्क के विरोध में क्या तर्क है

—खुदरा व्यापारी और वितरक कम मार्जिन पर काम करते हैं। डिजिटल लेनदेन पर अतिरिक्त शुल्क लगाने से लागत बढ़ेगी।

—डिजिटल भुगतान का उद्देश्य प्रक्रिया को आसान बनाना होना चाहिए, व्यापारियों पर बोझ डालना नहीं।

—यूपीआई से नकदी का चलन घटा है। व्यापारी व्यवस्था को पारदर्शी बनाने में सहयोग कर रहे हैं, तो उन पर शुल्क लगाना उचित नहीं।

—डिजिटल इंडिया को बढ़ावा देने के बजाय व्यापारियों पर शुल्क लगाना सजा देने जैसा है।

—सरकार ने इस फैसले पर फिर विचार नहीं किया तो आंदोलन को और तेज किया जाएगा।

यूपीआई एमडीआर शुल्क के नए नियम और

व्यापारियों पर प्रभाव

बड़े व्यापारियों पर 0.4 प्रतिशत शुल्क: महीने में 1 लाख रुपये से ज्यादा यूपीआई प्राप्त करने वाले पात्र व्यापारियों को 2,000 रुपये से अधिक के प्रत्येक भुगतान पर 0.4 प्रतिशत एमडीआर देना होगा। एमडीआर पर 18 प्रतिशत जीएसटी भी लागू होगा।

छोटे व्यापारियों को राहत: जिन छोटे व्यापारियों को यूपीआई के माध्यम से महीने में कुल 1 लाख रुपये तक प्राप्त होते हैं, उन्हें एमडीआर से छूट मिलेगी।

शुल्क लागू होने की सीमा: 2,000 रुपये तक के पात्र व्यक्ति—से—व्यापारी (पी2एम) यूपीआई लेनदेन पर एमडीआर नहीं लेगा।

2,000 रुपये से अधिक के पात्र लेनदेन पर 0.4 प्रतिशत एमडीआर लागू होगा।

अधिकतम शुल्क की सीमा: 75,000 रुपये या उससे अधिक के लेनदेन पर एमडीआर अधिकतम 300 रुपये प्रति लेनदेन तक सीमित रहेगा।

विशेष क्षेत्रों के लिए 5 रुपये की शुल्क सीमा: रेलवे, पेट्रोलियम, दूरसंचार और बीमा जैसे निर्धारित क्षेत्रों में 2,000 रुपये से अधिक के पात्र लेनदेन पर 0.4 प्रतिशत के बजाय 5 रुपये का निश्चित एमडीआर लागू होगा।

ग्राहक से शुल्क लेने की अनुमति नहीं: प्रस्तावित एमडीआर व्यापारी पर लागू होगा। बैंकों और भुगतान सेवा प्रदाताओं को यह शुल्क ग्राहक पर डालने से रोकने के लिए निर्देश दिए गए हैं।

मचैट डिस्काउंट रेट क्या होता है?

मचैट डिस्काउंट रेट यानी एमडीआर वह शुल्क है जो कोई व्यापारी या दुकानदार डेबिट/क्रेडिट कार्ड या डिजिटल भुगतान सुविधा का उपयोग करने के बदले बैंक और भुगतान सेवा प्रदाताओं को देता है।

यह शुल्क डिजिटल भुगतान ढांचे के जुड़ावे नेटवर्क को संचालित करने की लागत से जुड़ा होता है। मौजूदा प्रस्तावित यूपीआई व्यवस्था में एमडीआर व्यापारी पर लागू किया जाना है, ग्राहक पर नहीं।

BOOK YOUR DISPLAY CLASSIFIED ADVERTISEMENTS AT

Timings : 9 am to 7 pm

Head office

SHREE SIDDIVINAYAK PUBLICATIONS,

Plot No. A-23/5 & 6 2nd Floor,

APIE, Balanagar, Hyderabad - 500 037

City office

SHREE SIDDIVINAYAK PUBLICATIONS,

Plot No. A-23/5 & 6 2nd Floor,

APIE, Balanagar,

Hyderabad - 500 037

8688868345

शुभ लाभ

महाराष्ट्र

भाग्यनगर

दैनिक हिन्दी शुभ लाभ, हैदराबाद, गुरुवार, 01 अक्टूबर, 2026

शुभ लाभ

आपकी सेवा में

शुभ लाभ से जुड़ी किसी भी समस्या या सुझाव के लिए

मो. 86888 68345 पर संपर्क करें।

अग्रवाल समाज साउथ जोन शाखाओं की जयंती एवं डांडिया कार्यक्रम के उपलक्ष्य में बैठक आयोजित

11 अक्टूबर को महाराजा अग्रसेन जी की 5150वीं जयंती; नौ दिवसीय डांडिया कार्यक्रम की तैयारियां तेज



हैदराबाद, 30 सितंबर (शुभ लाभ ब्यूरो)। अग्रवाल समाज तेलंगाना साउथ जोन शाख-13ों की बैठक राघव रत्ना टावर की 10वीं मंजिल स्थित समाज के सभागृह में आयोजित की गई। मीडिया प्रचार-प्रसार कमेटी के चेयरमैन राजकुमार गुप्ता की प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया कि आगामी 11 अक्टूबर को महाराजा अग्रसेन जी की 5150वीं जयंती है। इसके उपलक्ष्य में समाज द्वारा कलासिक कन्वेंशन-3, शमशाबाद में नौ दिवसीय डांडिया कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। जयंती एवं डांडिया कार्यक्रम के सफल आयोजन की तैयारियों के लिए जोनवार बैठक की जा रही है। इसी क्रम में आज साउथ जोन शाखा के पदाधिकारियों एवं के.एस. सदस्यों के साथ बैठक आयोजित की गई।

सर्वप्रथम महाराजा श्री अग्रसेन जी की पूजा-अर्चना कर सभा का शुभारंभ हुआ। केंद्रीय संयुक्त मंत्री प्रतीक कुमार नरसरिया ने मंच संचालन करते हुए केंद्रीय पदाधिकारियों को मंच पर आमंत्रित किया। केंद्रीय कार्यकारी अध्यक्ष नरेंद्र गोयल ने सभा को संबोधित करते हुए सभी से आगामी डांडिया कार्यक्रम में सपरिवार सम्मिलित होकर इसे सफल बनाने का अनुरोध किया।

संयुक्त मंत्री प्रतीक नरसरिया ने समाज द्वारा आयोजित नौ दिवसीय डांडिया कार्यक्रम की विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यह बहुत ही भव्य डांडिया कार्यक्रम होने जा रहा है, जिसमें प्रतिदिन फिल्मी जगत की

सेलिब्रिटीज भाग लेंगी। जयंती के दिन हेमा मालिनी जी अपने ट्रूप के साथ दुर्गा नृत्य की प्रस्तुति देंगी। इसके अलावा महाभारत में भीष्म पितामह का किरदार निभाने वाले मुकेश खन्ना महाराजा अग्रसेन जी की वेशभूषा में रहेंगे। इसके अलावा भाग्यश्री, दिशा पाटनी, अनन्या पांडे, हनुमान अंश मूवी की टीम इत्यादि सेलिब्रिटीज नौ दिवसीय डांडिया कार्यक्रम में मौजूद रहेंगी। मुंबई का मशहूर ताल बँड ग्रुप भी नौ दिवसीय कार्यक्रम में धूम मचाएगा। उन्होंने बताया कि सदस्यों को डांडिया एवं गरबा सिखाने के लिए चार दिवसीय कार्यशाला भी आयोजित की गई है। उन्होंने सभी शाखाओं से इसमें बढ़-चढ़कर सम्मिलित होने का अनुरोध किया।

डांडिया कार्यक्रम संयोजक प्रवीण अग्रवाल ने कहा कि जयंती एवं डांडिया कार्यक्रम की तैयारियां जोर-शोर से चल रही हैं। इस कार्यक्रम में सदस्यों को प्रिविलेज कार्ड देखकर ही सम्मिलित होने दिया जाएगा। जिन सदस्यों ने अभी तक प्रिविलेज कार्ड नहीं बनाया है, वे शाखा के माध्यम से अथवा सीधे केंद्रीय समिति में आकर कार्ड बनवा सकते हैं। उन्होंने बताया कि नौ दिवसीय डांडिया कार्यक्रम में भोजन की व्यवस्था समाज द्वारा की जाएगी।

अग्रवाल समाज बैंकेट हॉल के चेयरमैन सुरेश कुमार (चिमनलाल सुरेश कुमार) ने अपने विचार रखते हुए शाखा पदाधिकारियों

से अनुरोध किया कि सदस्यों को नौ दिवसीय डांडिया कार्यक्रम में उनकी सुविधा के अनुसार भेजने का प्रबंध करें।

समाज परामर्शदाता राजेश गोयल एवं संदीप पटवारी ने भी सभा में अपने विचार प्रस्तुत किए। साउथ जोन समन्वयकर्ता अलका मिंडा ने बताया कि डांडिया कार्यक्रम में समाज की ओर से हर दिन ढेरों पुरस्कार दिए जाएंगे। ये पुरस्कार थीम के अनुसार हर वर्ग एवं आयु के प्रतिभागियों को दिए जाएंगे। इसके अलावा नौ दिवसीय कार्यक्रम में प्रदर्शन एवं परिधान के साथ प्रस्तुति देने वालों को भी पुरस्कार दिए जाएंगे तथा दैनिक आश्चर्य पुरस्कार भी रहेंगे।

सभा में उपस्थित साउथ जोन पदाधिकारियों एवं के.एस. सदस्यों से भी सुझाव मांगे गए कि कार्यक्रम को किस प्रकार और अधिक सफल बनाया जा सकता है। सदस्यों ने अपने विचार एवं सुझाव सभा में रखे।

आज की सभा में केंद्रीय समिति कार्यकारी अध्यक्ष नरेंद्र गोयल, बैंकेट हॉल चेयरमैन सुरेश कुमार (चिमनलाल सुरेश कुमार), डांडिया संयोजक प्रवीण अग्रवाल, समाज परामर्शदाता राजेश गोयल, संदीप पटवारी, संयुक्त मंत्री प्रतीक नरसरिया, साउथ जोन समन्वयकर्ता अलका मिंडा, मीडिया प्रचार-प्रसार कमेटी के चेयरमैन राजकुमार गुप्ता, साउथ जोन शाखाओं के पदाधिकारी एवं केंद्रीय समिति के सदस्य बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

अग्रसेन जयंती समारोह की तैयारियों को लेकर नाचारम-मल्लापुर शाखा की बैठक



हैदराबाद, 30 सितंबर (शुभ लाभ ब्यूरो)। अग्रसेन जयंती समारोह के आयोजन को लेकर अग्रवाल समाज तेलंगाना की नाचारम-मल्लापुर शाखा एवं कृष्णा सखियां, नाचारम की एक महत्वपूर्ण बैठक 29 सितंबर को आयोजित की गई। बैठक में आगामी अग्रसेन जयंती समारोह की तैयारियों एवं कार्यक्रम की रूपरेखा पर विस्तार से चर्चा की गई। बैठक में निर्णय लिया गया कि अग्रसेन जयंती समारोह का आयोजन शनिवार, 10 अक्टूबर 2026 को मंगलम बैंकेट हॉल, मल्लापुर में शाम 6:30 बजे से किया जाएगा। समारोह का शुभारंभ अग्रसेन जी की पूजा-अर्चना के साथ होगा। इसके पश्चात बच्चों एवं बड़ों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाएंगे। इच्छुक प्रतिभागियों को फैंसी ड्रेस सहित विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथियों का सम्मान तथा शाखा के सदस्यों एवं उनके परिवारों

का सम्मान भी किया जाएगा। बैठक में निर्णय लिया गया कि सम्मान समारोह केवल समिति के सदस्यों द्वारा संपन्न कराया जाएगा। समारोह में तंबोला एवं डांडिया विशेष आकर्षण होंगे। इसके पश्चात सभी सदस्यों एवं परिवारों के लिए रात्रिभोज की व्यवस्था रहेगी।

कार्यक्रम के संयोजक प्रदीप कुमार अग्रवाल, प्रवीण अग्रवाल, सत्यानारायण अग्रवाल एवं सुरेश जीतपुरिया होंगे। संयोजकों एवं समिति सदस्यों ने समारोह को व्यवस्थित एवं भव्य रूप से आयोजित करने के लिए विभिन्न व्यवस्थाओं पर भी चर्चा की। बैठक में प्रदीप अग्रवाल (अध्यक्ष), प्रवीण अग्रवाल (सचिव), सत्यानारायण अग्रवाल (कोषाध्यक्ष), मोहन अग्रवाल (संयुक्त सचिव), गोविंद अग्रवाल (उपाध्यक्ष), सुरेश अग्रवाल (संयोजक, अमावस्या अन्नदानम), निशा गुप्ता (अध्यक्ष, महिला शाखा) एवं मंदाकिनी अग्रवाल (उपाध्यक्ष, महिला शाखा) उपस्थित रहे।

समिति ने समाज के सभी सदस्यों एवं उनके परिवारों से समारोह में उत्साहपूर्वक भाग लेने तथा अग्रसेन महाराज के आदर्शों, सामाजिक एकता एवं पारिवारिक सहभागिता की भावना के साथ कार्यक्रम को सफल बनाने का आह्वान किया।

अग्रवाल समाज तेलंगाना का मेगा कैंप कल मैरिज डेटा, प्रिविलेज कार्ड एवं स्नातक एमएलसी मतदाता पंजीकरण की मिलेगी सुविधा

हैदराबाद, 30 सितंबर (शुभ लाभ ब्यूरो)। अग्रवाल समाज तेलंगाना की ओर से मैरिज डेटा, प्रिविलेज कार्ड एवं स्नातक एमएलसी मतदाता पंजीकरण के लिए विशेष मेगा कैंप का आयोजन शुक्रवार, 2 अक्टूबर को प्रातः 10 बजे से दोपहर 1 बजे तक भाग्यश्री फंक्शन हॉल, पिलर नंबर ए-1563, दिलसुखनगर, हैदराबाद में किया जाएगा। मेगा कैंप का उद्देश्य समाज के सदस्यों को एक ही स्थान पर तीन महत्वपूर्ण सुविधाएं उपलब्ध कराना है। मैरिज डेटा कमेटी के माध्यम से विवाह योग्य युवक-युवतियों के बायोडाटा जमा किए जाएंगे तथा उपलब्ध बायोडाटा के आधार पर उपयुक्त रिश्तों की तलाश में सहायता प्रदान की जाएगी। यह कार्य कमेटी के चेयरमैन महेंद्र अग्रवाल, संयोजक अशोक ज़िंदेल एवं उपाध्यक्ष पंकज संधी के मार्गदर्शन में संपन्न होगा। इसके साथ ही अग्रवाल

समाज सदस्यता एवं प्रिविलेज कार्ड बनाने की सुविधा भी उपलब्ध रहेगी। सदस्य अपने मोबाइल के माध्यम से मात्र कुछ मिनटों में प्रिविलेज कार्ड बनवा सकेंगे। सदस्यता अभियान कमेटी के चेयरमैन मुकुंद लाल अग्रवाल के साथ नीरज केडिया, डॉ. सरिता अग्रवाल, उमाशंकर गोयंका, पंकज संधी एवं मुकेश केडिया सहित कमेटी के सदस्य उपस्थित रहेंगे। वहीं, स्नातक एमएलसी मतदाता पंजीकरण के लिए विशेष एमएलसी पंजीकरण सहायता केंद्र भी लगाया जाएगा, जहां पात्र स्नातकों को पंजीकरण संबंधी जानकारी एवं सहायता प्रदान की जाएगी। यह सेवा भगवती शाखा द्वारा संचालित की जाएगी। भगवती शाखा के अध्यक्ष नीरज केडिया एवं सचिव डॉ. सरिता अग्रवाल के नेतृत्व में पात्र स्नातकों को एमएलसी मतदाता पंजीकरण में सहायता उपलब्ध कराई जाएगी।



सिखवाल समाज, सिक्कराबाद की ओर से श्री मूर्ति शशिधर रेड्डी जी, पूर्व उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) एवं श्री नेमली आनंद जी, भाजपा सिटी जनरल सेक्रेटरी का शॉल ओढ़ाकर एवं पुष्पगुच्छ भेंट कर हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर समाज के पदाधिकारी एवं गणमान्य सदस्य उपस्थित रहे।



सिक्कराबाद में सिखवाल समाज महिला मंडल की बैठक आयोजित हुई। बैठक में समाज की एकता, आपसी सहयोग एवं विकास को लेकर विस्तार से चर्चा की गई।

पयूचर सिटी ट्रैफिक पुलिस कर्मियों को रोजमर्रा की ड्यूटी के लिए उपयोगी उपकरण वाले ट्रैफिक पुलिस किट्स वितरित किए गए। संयुक्त आयुक्त पुलिस श्रीमती जी. चंदना दीप्ति, आईपीएस और डीसीपी ट्रैफिक श्री शिवम उपाध्याय, आईपीएस ने ये किट्स सौंपी।

अधिकारियों ने कहा कि ट्रैफिक पुलिस कर्मी सड़कों पर लंबे समय तक ड्यूटी करते हैं। उचित उपकरण उपलब्ध कराने से वे अधिक व्यवस्थित और प्रभावी ढंग से काम कर सकेंगे।

महावीर इंटरनेशनल हैदराबाद ने लगाया ‘खुशियों का बाज़ार’

हैदराबाद, 30 सितंबर (शुभ लाभ ब्यूरो)। महावीर इंटरनेशनल हैदराबाद द्वारा 28 एवं 29 सितंबर 2026 को काचीगुड़ा जैन स्थानक के पास तथा डायमंड पॉइंट, सिक्कराबाद कंटोनमेंट वर्क शॉप छावनी में ‘खुशियों का बाज़ार’ का आयोजन किया गया। इस सेवा प्रकल्प के अंतर्गत जरूरतमंद परिवारों को मात्र 10 रुपये प्रति कपड़े की दर से अच्छी गुणवत्ता के वस्त्र उपलब्ध कराए गए। लोगों के चेहरों पर मुस्कान देखकर इस सेवा प्रकल्प का उद्देश्य सफल होता दिखाई दिया। जरूरतमंद लोगों को वस्त्र उपलब्ध कराने के साथ उनमें



आत्मनिर्भरता की भावना बढ़ावा देने का भी प्रयास किया गया। लोगों के चेहरों पर मुस्कान

देखकर यह कार्य सफल हुआ। इस सेवा कार्य में अपना बहुमूल्य समय एवं सहयोग देने वाले सभी

राजस्थानी जागृति समिति के तत्वावधान में

श्रीमद् भागवत कथा आज से



हैदराबाद, 30 सितंबर (शुभ लाभ ब्यूरो)। राजस्थानी जागृति समिति (पंजीकृत), हैदराबाद के तत्वावधान में सात दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन आज गुरुवार, दि. 1 अक्टूबर से बुधवार, 7 अक्टूबर 2026 तक किया जाएगा। कथा का समय प्रतिदिन मध्याह्न 3.00 बजे से शाम 7.00 बजे तक रहेगा। कथा का आयोजन श्री साई बाबा मंदिर प्रांगण, एन.एम. गुड़ा, अत्तापुर चौरस्ता, हैदराबाद में किया जाएगा। कथा का वाचन वृंदावन धाम की बाल विदुषी सुश्री प्रिया किशोरी जी करेंगी। कथा का सीधा प्रसारण यूट्यूब पर भी किया जाएगा।

आयोजन के मुख्य यजमान श्री अंजनी कुमारजी अग्रवाल, पूर्व अध्यक्ष, अग्रवाल समाज, तेलंगाना, श्री सत्यनारायण पोलिया, अध्यक्ष, अग्रवाल समाज, अत्तापुर तथा श्रीनिवास सोमानी, अध्यक्ष, राजस्थानी जागृति समिति हैं।

आयोजन के शुभारंभ अवसर पर गुरुवार, 01 अक्टूबर 2026 को कलश यात्रा निकाली जाएगी। कलश यात्रा दोपहर 2.00 बजे श्री विठ्ठल रुक्मिणी मंदिर, शिवाजी नगर से प्रारंभ होकर कथा स्थल तक पहुंचेगी। आयोजन समिति ने श्रद्धालुओं से कलश यात्रा एवं श्रीमद् भागवत कथा में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होकर धार्मिक आयोजन का लाभ लेने का आह्वान किया है।

श्रीमद् भागवत कथा के दैनिक यजमानों में श्री अनिरुद्ध गुप्ता, अध्यक्ष अग्रवाल समाज, तेलंगाना; श्री मनीष अग्रवाल, पूर्व अध्यक्ष अग्रवाल समाज, तेलंगाना; श्री कुणकुमार सौंथलिया, श्री राम कुमार गोयल (एआरसी), श्री रामनिरंजन अग्रवाल, श्री बैजनाथ सिमोनडिया, श्री धनराज महेंद्र कुमार सिमोनडिया, श्री वेणुगोपाल तोतला, श्री मुकेश कुमार लोया, श्री कमलकिशोर कांकाणी, श्री कमल सोनी, श्री विरेंद्र कुमार अग्रवाल, टूस्टी- लव फॉर काऊ फ़ाउण्डेशन; श्रीमती जया रमेश जागीरदार, अध्यक्ष- रमेश जागीरदार फ़ाउण्डेशन; श्री राजेंद्र बेहवाल, अशोक कुमार हिरावत तथा श्री सुधाकर रेड्डी, अध्यक्ष, साई बाबा मंदिर, अत्तापुर शामिल हैं। आयोजन में श्री इंद्रकुमार सौंथालिया, श्री

54वें रामायण मेले की तैयारियों को लेकर बैठक आज

राजस्थानी प्रगति समाज एवं आर.के. एंजिनिशिन सोसाइटी मेला समिति की बैठक

हैदराबाद, 1 अक्टूबर (शुभ लाभ ब्यूरो)। राजस्थानी प्रगति समाज एवं आर.के. एंजिनिशिन सोसाइटी मेला समिति द्वारा एंजिनिशिन ग्राउंड में भव्य रामायण मेले का आयोजन किया जाता है। इसी संदर्भ में 54वें रामायण मेले की तैयारियों को लेकर गुरुवार, 1 अक्टूबर 2026 को राजस्थानी प्रगति समाज के हश्मतगंज स्थित कार्यालय में शाम 4 बजे बैठक का आयोजन किया गया है।

राजस्थानी प्रगति समाज के अध्यक्ष कमल नारायण अग्रवाल, मानद मंत्री तथा मेले के प्रधान संयोजक गोविंद नारायण राठी की प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया कि बैठक में रामायण मेले के आयोजन को लेकर विभिन्न समितियों का गठन किया जाएगा। उन्होंने सभी हिंदू भाइयों से आग्रह किया है कि बैठक में पधारकर सहभागिता करें और बैठक को सफल बनाएं।

सेवा वही, जिसमें अपना कुछ नहीं : राम प्रकाश अग्रवाल

हैदराबाद। राधे-राधे ग्रुप हैदराबाद के तत्वावधान में बुधवार को नामपल्ली स्थित पब्लिक गार्डन पिलर नंबर 1265-ए के पास नियमित अन्नसेवा कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर ग्रुप के संयोजक राम प्रकाश अग्रवाल ने कहा कि किसी जरूरतमंद के चेहरे पर भोजन मिलने के बाद आने वाली संतुष्टि ही सेवा की सबसे बड़ी कमाई है। सेवा में यदि स्वार्थ आ जाए तो उसका भाव कमजोर पड़ जाता है, लेकिन जहां निस्वार्थ समर्पण होता है, वहां छोटी-सी पहल भी किसी के जीवन में बड़ी खुशी बन जाती है। राम प्रकाश अग्रवाल ने कहा कि राधे-राधे ग्रुप की सेवा किसी एक दिन, किसी विशेष अवसर या किसी व्यक्ति तक सीमित नहीं है। पिछले लगभग दो वर्षों से नामपल्ली में लगातार चल रही अन्नसेवा इस बात का प्रमाण है कि जब नेक भावना को सामूहिक सहयोग मिल जाए तो समय भी उस संकल्प को रोक नहीं सकता। आज समाज के



अलग-अलग वर्गों के लोग इस कार्य से जुड़कर अपनी सहभागिता निभा रहे हैं और यही इस अभियान की सबसे बड़ी ताकत है। उन्होंने कहा कि सेवा करने के लिए बहुत कुछ होना जरूरी नहीं है। किसी के पास समय है तो वह समय दे सकता है, किसी के पास साधन हैं तो वह साधन दे सकता है और कोई अपनी उपस्थिति से भी इस कार्य को मजबूती दे सकता है। असली आवश्यकता मन में दूसरों के लिए कुछ करने की इच्छा की है। जब

हाथ किसी जरूरतमंद की मदद के लिए आगे बढ़ते हैं, तभी मानवता का अर्थ सार्थक होता है। इस अवसर पर राम प्रकाश अग्रवाल, सुनीता अग्रवाल, संजय गोयल, किरण गोयल, भगत राम गोयल, नंद किशोर अग्रवाल, भाकर राम कुमावत, कमला देवी कुमावत, सुरेश सिंघल, कैलाश केडिया, जगन गुप्ता, नंदगोपाल, जितेंद्र, सतीश गुप्ता सहित राधे-राधे ग्रुप हैदराबाद के अनेक सदस्य उपस्थित रहे।

सुराना, वीरा चन्दना नाहटा, वीरा दीपा आंचलिया, वीरा राखी बाफना, वीरा अनीता खिनवसरा एवं अन्य सभी सदस्यों ने सेवा कार्य में सहयोग किया। महावीर इंटरनेशनल हैदराबाद के चेयरमैन वीर विनोद संवेती, सेक्रेटरी वीरा कल्पना बरलोटा एवं ट्रेज़रर वीर अनिल बोहरा ने सभी सदस्यों का तहे दिल से हार्दिक धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया। ‘खुशियों का बाज़ार’ जरूरतमंद परिवारों तक गुण-वत्तापूर्ण वस्त्र पहुंचाने के साथ सेवा, सम्मान और खुशी बांटने का एक सार्थक प्रयास रहा।

